चन्दामामा

जुलाई १९७३

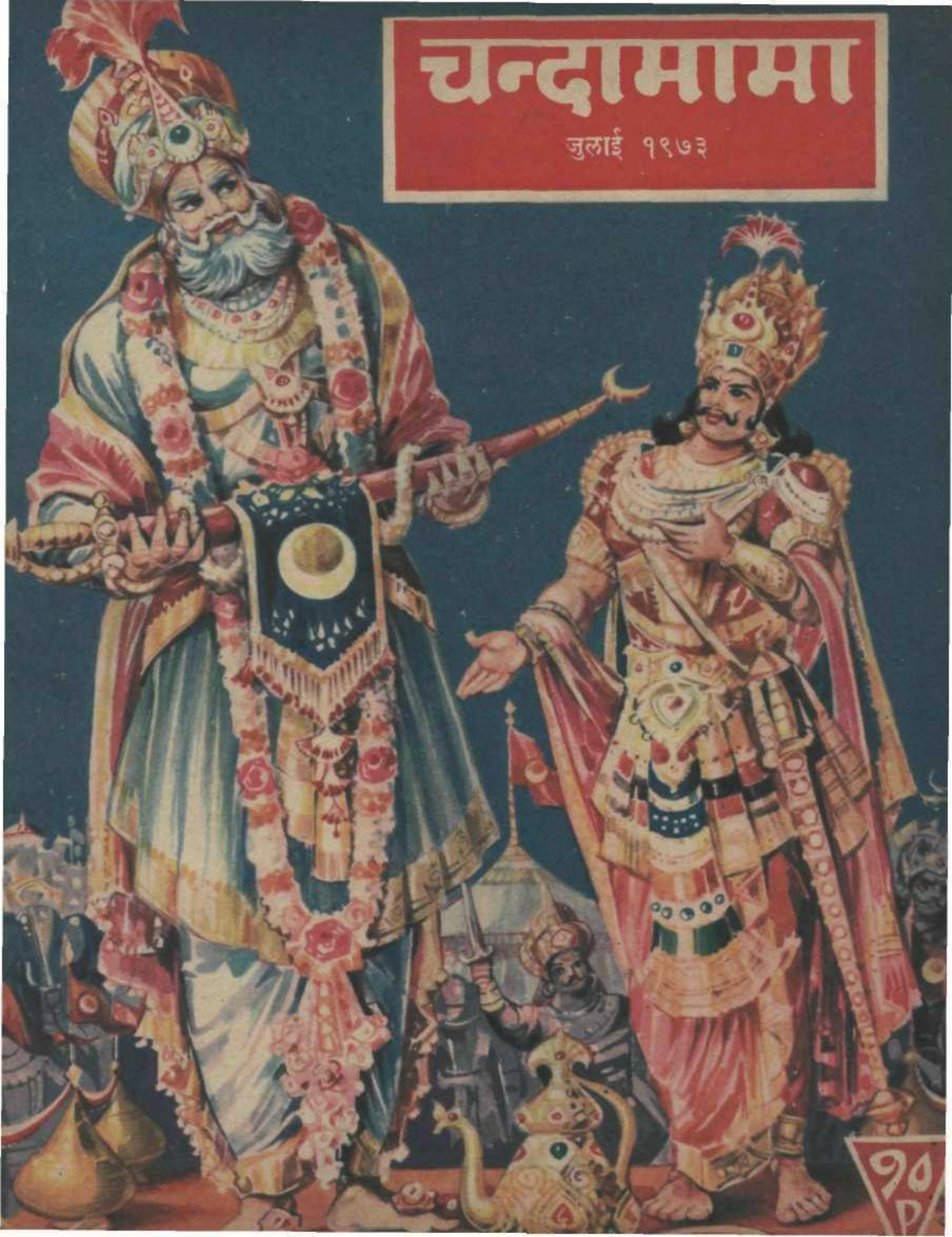

Photo by: SURAJ N. SHARMA

बताइये तो, किस बच्चे को उसकी मां इनक्रिमिन* देती है?

आपका अंदाज सही है!

ड्राप्स—१ महीने से २ वर्ष के बच्चों के लिए
सिरप—१४ वर्ष तक के बच्चों के लिए

यह टानिक है महान!
बढ़ते बच्चों के लिए वरदान

इनक्रिमिन* टानिक

अधिक खुराक को अधिक विकास में बदल देता है

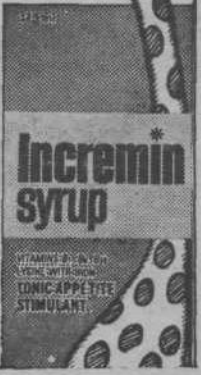

डाक्टरों का विश्वास पात्र नाम Laderle
सायनामिड इंडिया लिमिटेड का एक विभाग।
* अमेरिकन सायनामिड कम्पनी का रजिस्टर्ड ट्रेड नाम

SISTA'S/INC/959 HIN

प्रत्येक पुस्तकालय में रखने योग्य!

★

'SONS OF PANDU'
Rs. 5-25

'THE NECTAR OF THE GODS'
Rs. 4-00

अंग्रेज़ी में रचित: लेखिका
श्रीमती मधुरम भूतलिंगम

भेंट देने व संग्रह करने योग्य
बालकोपयोगी पुस्तकें!

★

आज ही आदेश दे:

डाल्टन एजेन्सीस

'चन्दामामा बिल्डिंग्स'
मद्रास-२६

कैम्ब्रिज छात्रों के लिए है

नया! आश्चर्यजनक!! असाधारण!!!
स्वान कैम्ब्रिज पैन

इस पैन की गोल्ड-प्लेटेड इरिडियम टिप्ड निब अति साफ सुथरा लिखती है।
यह सरलता से बिना दाग-धब्बे और बिना ज़ोर दिये चलती है।

इसकी दूसरी विशेषताएँ:
- चमकदार, शानदार आधुनिक बॉडी
- पक्के रंगवाला सुनहारी कैप
- ३ आकार, रेगुलर, सेल्फ-फिलिंग, अॅरोमैटिक
- आपकी पसंद के लिए अनेक आकर्षक रंग

अच्छे परिणाम के लिए **स्वान** डिलक्स स्याही इस्तेमाल कीजिए

TRADE MARK

स्वान (इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड
अडवानी चैम्बर्स, फि. मेहता रोड, बम्बई-१ बी.आर.
शाखा: ३४बी, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-१

hero's-SI-1148 HN

डोनल्ड डक के साथ—
बचत में बड़ा मज़ा है !

सहज और सक्रिय रूप में बचत की आदत डालनें में अपने बच्चों की मदद कीजिये। चार्टर्ड बैंक के किसी भी शाखा में चले आइये और 'डिस्नी कैरेक्टर खाते' में सिर्फ ५/- रु० से एक खाता खोल दीजिये। 'डिस्नी कैरेक्टर खाते' के साथ हर बच्चे को मुफ्त में दिये गये 'डोनल्ड डक् मनी बॉक्स' में बचत के रुपये बढ़ते देख उसे बड़ा मज़ा आयेगा।

दि चार्टर्ड बैंक

— जहाँ सेवा को महत्वपूर्ण माना जाता है

भारत में शाखाएँ :अमृतसर, बम्बई, कलकत्ता, कैलिकट, कोचिन, दिल्ली, कानपुर, मद्रास, नई दिल्ली एवं वास्को डि गामा

SEKAJ/CB/H/540

एक मज़ेदार खेल!

चिक्लेट्स® जोकर्स

प्रश्नों का उत्तर दो
और इनाम लो

१. भारत के प्रथम राष्ट्रपति कौन थे ?

.....

२. संसार की सबसे बड़ी नदी कौन सी है ?

.....

३. बांगला देश किस दिन स्वतंत्र हुआ ?

.....

४. संसार का दूसरे नंबर का सबसे ऊँचा पहाड़ कौन सा है ?

.....

५. नोबेल पुरस्कार प्राप्त करनेवाले पहले भारतीय कौन थे ?

.....

६. चाँद पर उतरनेवाला पहला आदमी कौन था ?

.....

इन प्रश्नों का उत्तर दे लेने के बाद प्रवेश-पत्र को और नीचे दिये कूपन को अंग्रेज़ी में भर कर १२ पैलेटवाले चिक्लेट्स के एक खाली पैक के साथ नीचे दिये गए पते पर भेज दो. पता अंग्रेजी में ही लिखो.

Chiclets Product Officer CH
Post Box 9116, Bombay 25.

इस प्रतियोगिता में १५ साल से कम उम्र के बच्चे ही भाग ले सकते हैं.

प्रथम प्राप्त होनेवाले १०० सर्व सही हलों (प्रत्येक भाषा में १०) पर प्रत्येक को मिलेंगे ४ कॉमिक या 'वर्ल्ड १००' के विभिन्न डाक टिकट.

चिक्लेट्स अब छः मज़ेदार रसीले स्वाद में मिलते हैं : पेपरमिंट, ऑरेंज, ट्रूटी-फ्रूटी, लेमन, पाइनएपल और चॉकलेट.

(अपना नाम और पता अंग्रेज़ी में लिखो)

नाम .....

.....

पता .....

.....

मेरी पसंद है ☐ ४ कॉमिक या ☐ 'वर्ल्ड १००' के विभिन्न डाक टिकट
(अपनी पसंद पर निशान लगा दो)

चिक्लेट्स®—विटामिन ए और डी तथा कैल्शियम सहित मज़ेदार चूइंग गम.

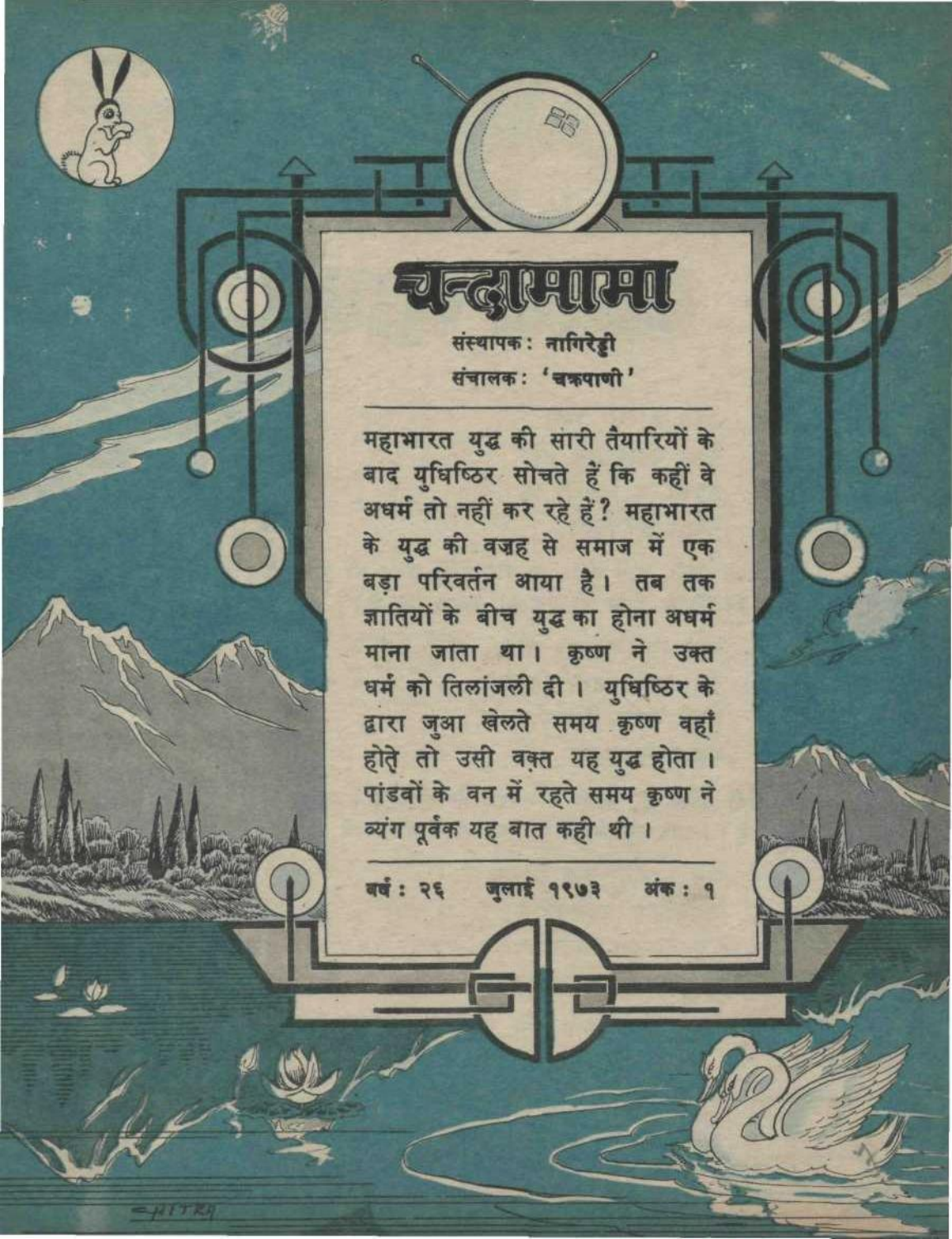

चन्दामामा

संस्थापक : नागिरेड्डी
संचालक : 'चक्रपाणी'

महाभारत युद्ध की सारी तैयारियों के बाद युधिष्ठिर सोचते हैं कि कहीं वे अधर्म तो नहीं कर रहे हैं? महाभारत के युद्ध की वजह से समाज में एक बड़ा परिवर्तन आया है। तब तक ज्ञातियों के बीच युद्ध का होना अधर्म माना जाता था। कृष्ण ने उक्त धर्म को तिलांजली दी। युधिष्ठिर के द्वारा जुआ खेलते समय कृष्ण वहाँ होते तो उसी वक़्त यह युद्ध होता। पांडवों के वन में रहते समय कृष्ण ने व्यंग पूर्वक यह बात कही थी।

वर्ष : २६ जुलाई १९७३ अंक : १

उदये सविता रक्तः,
रक्त श्चास्तमये तथाः
संपत्तौ च विपत्तौ च,
महता मेकरूपता ॥ १ ॥

[सूर्य उगते वक़्त लाल होता है और डूबते समय भी लाल होता है। मगर महात्मा लोग संपत्ति व विपत्ति के समय भी एक ही प्रकार होते हैं।]

यथा चित्तम् तथा वाचः,
यथा वाचः तथा क्रियाः,
चित्ते वाचि क्रियायाम् च,
महता मेकरूपता ॥ २ ॥

[मन जैसा होता हैं, वाणी भी वैसी ही होती है। वाणी जैसी होती है, कार्य भी वैसा ही होता है। मगर महात्माओं के मन, वाणी और कार्य एक समान होते हैं।]

मन स्येकम्, वच स्येकम्
कर्मण्येकम् महात्मनाम्;
वच स्यन्यत्, मनस्यन्यत्
कर्मण्यन्यत्, दुरात्मनाम ॥ ३ ॥

[महात्माओं के मन, वाणी तथा कार्य एक से होते हैं, पर दुष्टों में वे भिन्न होते हैं।]

महात्मा

अद्भुत फैसला

एक गांव में कनकदास और कनकलक्ष्मी नामक दंपति थे। कनकदास बड़ा क़िफायती था। वह हर महीने सैकड़ों रुपये कमाता था। फिर भी वह अपने दोनों के खाने के लिए सिर्फ़ दो रुपये रोज़ खर्च करता था। बाक़ी रुपये तिजोरी में रखकर ताला लगा देता और चाभी को अपनी कमर में सुरक्षित रख लेता था। कनकलक्ष्मी रोती-धोती, तब भी कनकदास दो रुपये से ज़्यादा एक पैसा भी देता न था। इसलिए कनकलक्ष्मी रोज़ अपने पति को मन में गालियाँ दे देती।

एक दिन सवेरे कनकदास किसी काम पर पड़ोसी गाँव में जाते अपनी पत्नी के हाथ अठन्नी रखकर बोला–"लो, इससे तुम एक जून का खाना बना लो।"

कनकलक्ष्मी ने अठन्नी को उलट-पलट कर देखते हुए संदेह भरे स्वर में पूछा–"तो फिर रात के खाने के लिए? मैंने भूल से तुम से शादी की, इस अपराध में रात को फाका नहीं रखोगे न?"

"मैं शाम तक लौट आऊँगा। रात के खाने के लिए तब दूंगा।" कनकदास ने जवाब दिया।

"एक अठन्नी और दो, तो तुम्हारा दीवाला नहीं निकलेगा न? तिजोरी में धन भरा हुआ है, फिर भी मेरे हाथ एक पैसा भी नहीं रहता। मेरे घरवालों ने ढूंढ़-ढूंढ़ कर आखिर तुम जैसे कंजूस के गले मुझे मढ़ दिया है!" यों कहते कनकलक्ष्मी आंसू पोंछने लगी।

अपनी पत्नी की बातों पर ध्यान दिये बिना कनकदास जल्दी-जल्दी चला गया।

कनकलक्ष्मी ने मन ही मन अपने पति की निंदा की, बाज़ार जाकर खाने की चीज़ें खरीद लीं, रसोई बनाकर खा लिया,

भोला प्रसाद सिंह

झूठा पत्तल पिछवाड़े में फेंककर भीतर आयी, तभी अचानक उसका पिता आ पहुँचा।

पिता ने घर में क़दम रखते ही पूछा– "बेटी, कुशल हो न?" कनकलक्ष्मी पहले ही अपने पति पर खीझी हुई थी, पिता की बातें सुनकर वह भड़क उठी और बोली– "पिताजी, तुमने मुझे इस नरक में ढकेल दिया! कुशल कहाँ से हूँगी? तुम्हारे दामाद मेरे हाथ एक कौड़ी भी नहीं देते। धन जोड़कर तिजोरी भरते जा रहे हैं! ऐसे वक़्त-बेवक़्त कोई मेहमान आवे तो मैं क्या खिला सकती हूँ?" यों कनकलक्ष्मी अपने पिता पर बरस पड़ी।

कनकलक्ष्मी का पिता ये बातें सुन चौंक पड़ा और बोला–"बेटी, मैं तुम्हारे घर खाने नहीं आया हूँ। तुम्हारे कुशल समाचार जानने आया हूँ।" यों कहकर वह चुपके से खिसक गया।

कड़ी धूप में घर आये हुए अपने पिता को कनकलक्ष्मी खाना भी खिला न पायी, इसलिए उसे अपने पति के व्यवहार पर बड़ा क्रोध आया। उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि अब चुप रहने से कोई फ़ायदा नहीं, उसे अपने पति के इस व्यवहार का विरोध करना है।

संध्या के समय कनकदास घर लौट आया, अपनी कमर में खोंसी हुई चाभी निकालते कहा–"मैं खाना खाकर आया हूँ। तुम्हारे खाने के लिए अब बेकार अठन्नी खर्च करनी होगी।"

कनकलक्ष्मी ने झट अपने पति के हाथ से चाभी खींच ली और गरज कर बोली–"आइंदा यह चाभी मेरे ही पास होगी। आज से मैं मनमाने रुपये खर्च करूँगी। कड़ी दुपहरी में तुम्हारे मामा घर आये तो बिना खाना खिलाये उन्हें वापस भेजना पड़ा। यह बात लोगों पर प्रकट हो जायगी तो क्या सोचेंगे?"

कनकदास ने गुस्से में आकर कहा– "क्या रुपये खर्च करना कोई बड़ा काम

है? कोई यूंही कमा कर देनेवाला हो तो मैं भी खर्च करूँगा ; चाभी दे दो।"

"मैं कभी नहीं दूंगी।" कनकलक्ष्मी ने स्पष्ट शब्दों में कहा।

"क्यों नहीं दोगी? मेरे रुपये खर्च करनेवाली तुम कौन हो?" यों कहते कनकदास अपनी पत्नी के हाथ से चाभी खींचने को हुआ।

"मैं कोई परायी औरत नहीं हूँ। तुम्हारी पत्नी हूँ। तुम्हारे रुपये खर्च करने का हक़ मुझे भी है। रुपये खर्च करने के लिए न हो तो किसलिए हैं?" यों कहते कनकलक्ष्मी गली में भाग गयी।

उसी वक़्त अपनी तोंद पर हाथ फेरते सामनेवाले घर का अमीर चबूतरे पर आया, पति-पत्नी को झगड़ते देख पूछा–"अरे झगड़ते क्यों हो? बात क्या है?"

कनकलक्ष्मी ने अमीर को सारी बातें सुनाकर कहा–"अब आप ही फ़ैसला कीजिये। आप जो भी निर्णय करेंगे, वह चाहे मुझे पसंद आवे या न आवे, मैं मान जाऊँगी।"

"अरे, तुम दोनों झगड़ते हो तो मैं क्यों फ़ैसला करूँ!" यों कहते अमीर ने घर के भीतर जाकर दर्वाजे बंद कर लिये।

चार मकान आगे रहनेवाली मुखिये की पत्नी यह तमाशा देखती रही। उसने वहीं से पूछा–"यह झगड़ा कैसा?"

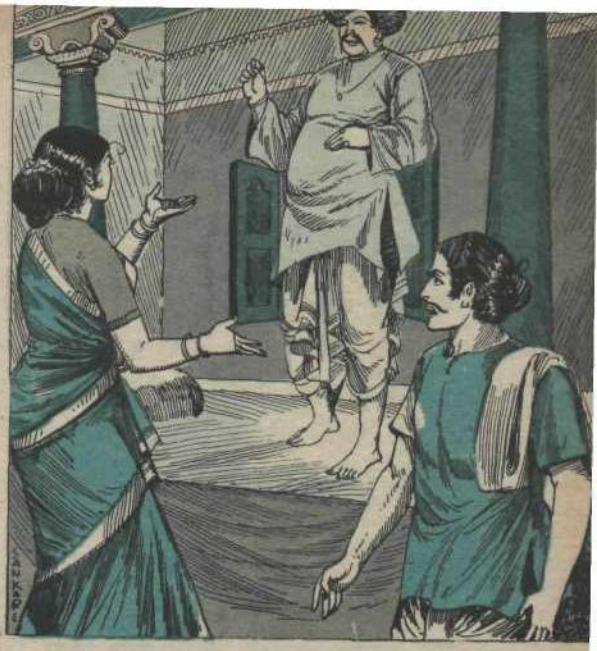

कनकलक्ष्मी ने उसके पास जाकर सारी बातें सुनायीं और फ़ैसला सुनाने को कहा।

मुखिये की पत्नी ने सारी बातें सावधानी से सुनीं और कहा–"वाह, यह भी खूब है! मैं फ़ैसला क्यों सुनाऊँ! मेरे पास थोड़े ही फ़ुरसत है?" यों कहते वह भी जल्दी-जल्दी घर के भीतर चली गयी।

चार और मकानों के आगे खड़े हो एक बुजुर्ग यह तमाशा देख रहा था। दोनों ने जाकर उसे सारा समाचार सुनाया और फ़ैसला करने का निवेदन किया।

"मैं क्या कह सकता हूँ? पति-पत्नी के झगड़े का फ़ैसला भगवान ही करें।" यों कहते उसने सिर उठाकर आसमान की

ओर देखकर नमस्कार किया और मौन रह गया।

"अच्छी बात है, चलो, भगवान से ही पूछ लेंगे!" यों कहते कनकलक्ष्मी अपने पति की बाँह पकड़ कर मंदिर के पास खींच ले गयी। मंदिर में पुजारी न था, पर गर्भ-गृह में दीपक जल रहा था।

पति की बाँह पकड़ कर कनकलक्ष्मी सीधे गर्भगृह में पहुँची और बोली– "भगवन, क्या पति के कमाये धन को पत्नी का खर्च करना अपराध है? तुम ही न्याय का निर्णय करो। यह मेरा पति मुझे एक कौड़ी भी नहीं देता। इसको समझाओ, इसकी अक़्ल ठिकाने लगे।"

पर भगवन ने कोई जवाब नहीं दिया।

"भगवन, सुनो, यह भले ही मेरी पत्नी हो, क्या इसे मेरा धन खर्च करने का हक़ है? खाने के लिए तो पैसे दे ही रहा हूँ। इसके हाथ एक पाई भी नहीं बचती। इसलिए मैं नहीं देता।" यों कनकदास ने अपनी पत्नी की शिकायत की।

इस बीच पुजारी मंदिर में लौट आया, उसने सारी बातें समझ लीं और कहा– "गर्भगृह में यह क्या हल्ला मचाये हुए हो? बाहर चलो, मंदिर के बंद करने का समय हो गया है। तुम लोगों का फ़ैसला करने के लिए भगवान को थोड़ा सोचने का मौक़ा दो।" यों कहकर पुजारी ने पति-पत्नी को मंदिर से बाहर भेज दिया।

उनका फ़ैसला न हुआ था, इसलिए पति-पत्नी बाज़ार में पहुँच कर फिर झगड़ा करने लगे। तब कई लोग वहाँ पर जमा हुए। सब ने उन्हें समझाया–"तुम दोनों अपने घर में जाकर झगड़ा करो, मगर इस तरह बाज़ार में झगड़ने से सबको दिक्कत होती है।" यों समझा कर उन दोनों को उनके घर खींच ले गये।

घर में पहुँचते ही पति-पत्नी के मुंह खुले के खुले ही रह गये। क्योंकि तिजोरी खुली हुई थी। किसीने उसे तोड़कर सारे रुपये हड़प लिये थे!

प्रारब्ध

एक गाँव में अमरनाथ नामक एक गरीब किसान था। उसकी प्रथम संतान एक अंधी लड़की थी। अमरनाथ और उसकी पत्नी अंधी लड़की को देख बहुत दुखी हुए। उस लड़की का नाम भागमती रखा गया। वह जैसे-तैसे बढ़ती गयी।

भागमती जब बारह साल की हुई, तब तक अमरनाथ के और पांच बच्चे हुए। गृहस्थी का भार अमरनाथ से सहा नहीं गया। अंधी भागमती कोई काम करना जानती न थी।

एक दिन अमरनाथ और उसकी पत्नी ने यों सोचा–"हमारे दिन काटने में बड़ी मुसीबत हो रही है। इस अंधी लड़की को पाल-पोसकर बड़ा करने से क्या फ़ायदा? बड़ी हो जाने पर भी इसकी शादी तो नहीं हो सकती। वह हमारे सीने पर चूल्हा बन बैठेगी। उसे कहीं छोड़ दे तो उसका प्रारब्ध जैसे होगा, वैसा जोयेगी। कोई दयालू उसे आश्रय दे सकता है! हमारी ताक़त से बढ़कर जो बोझ हम पर आ पड़ा है, उसे भगवान पर छोड़ देना उत्तम होगा।"

यह निर्णय करके दूसरे दिन अमरनाथ भागमती को साथ ले घर से चल पड़ा। रास्ते में उसका हृदय उसे कोस रहा था।

चलते-चलते शाम को वे दोनों एक नदी के किनारे पहुँचे। बरसात को छोड़ बाक़ी दिनों में उस नदी में पानी न होता था। अमरनाथ भागमती के साथ उस नदी में उतरा। वहाँ पर बैठकर बासी भात की पोटली खोल दी, भागमती को थोड़ा खाना खिलाया, उसने भी थोड़ा खाया। थोड़ी दूर पर पानी का एक गड्ढा था। दोनों ने पानी पिया।

दत्तात्रेय वर्मा

उस रात को दोनों नदी में ही लेट गये। ठण्डी हवा चल रही थी, इसलिए दोनों आराम से सो गये। सवेरा होते ही उठकर अमरनाथ ने भागमती की ओर देखा। वह निश्चिंत सो रही थी। अमरनाथ की आँखों में उस अबोध को देखते ही पानी भर आया। उसने अपनी बेटी को चूम लिया और जल्दी जल्दी अपने गाँव की ओर चल पड़ा।

थोड़ी देर बाद भागमती उठ बैठी। उसने अपने बाप को पुकारा। उसे यह नहीं सूझा कि उसका बाप उसे अकेले छोड़ चला गया है। उसने दो-तीन बार अपने बाप को पुकारा, जवाब न मिलने पर उसने सोचा कि उसका बाप उसे खाना लाने के लिए कहीं गया है।

भागमती ने निश्चिंत हो बालू में उंगलियाँ चलाकर कुछ कंकड़ बीन लिये, उनमें से पाँच कंकड़ चुनकर बाक़ी फेंक दिये। उन कंकड़ों से वह खेलने लगी। लोग नदी के किनारे इधर-उधर जा रहे थे, पर किसी ने भी भागमती की ओर ध्यान नहीं दिया।

अपनी बेटी को छोड़ अमरनाथ ज्यों ज्यों दूर जाने लगा, त्यों त्यों उसका दिल भारी होने लगा। वह सोचने लगा– "बेचारी भागमती क्या करती होगी? क्या वह रोती होगी? या कोई उसे उठा ले गया है? वह अबोध है! उसने कोई पाप नहीं किया! छे बच्चों में से क्या यही एक मेरे लिए बोझ बन जायगी?"

यों सोचते अमरनाथ के पैर आगे बढ़ते न थे। वह जल्दी जल्दी वापस मुड़कर भागमती के निकट आया। उसे निश्चिंत खेलते देख अमरनाथ चकित रह गया। वह जिन कंकड़ों से खेल रही थी, उनमें से एक साधारण कंकड़ न था। बल्कि हीरा था और चकाचौंध किये हुए था।

अमरनाथ का हृदय आनंद से भर उठा। वह चिल्ला पड़ा–"बेटी, भागमती!" तब अपनी बेटी को उठाकर उसका मुँह चूम लिया और अपने घर वापस ले आया।

चक्र पर्वत

[१३]

[समरबाहू तथा उसके अनुचर को भालू जाति के दल के लोग गुफा के भीतर ले गये। खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने धुआँ उठनेवाले प्रदेश में पहुँचकर गुफा दुर्ग को पहचान लिया और उसके भीतर पहुँचे। वहाँ पर गुरु भल्लूक के शिष्यों ने उन्हें पकड़ लिया और सुरंग के मार्ग में भेड़ियोंवाली चट्टान के पास ले जाने लगे। तब–]

अंधेरे से भरे उस सुरंग मार्ग में भालू जाति के लोग खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को कुछ दूर तक ले गये और एक स्थान पर रुक गये। तब आगे चलनेवाला पीछे चलनेवाले से बोला–"अरे भाई, ये दोनों क्षत्रिय युवक भेड़ियों वाली चट्टान को मनोरंजन का स्थान समझ रहे हैं। पिछली बार हम जिन को ले आये, वे भेड़ियों के गर्जन सुनते ही काँप उठे थे। मगर ये दोनों बिलकुल डरते भी से नहीं लगते। उल्टे हँसते चले जा रहे हैं। क्या इन्हें दिखा दे कि भेड़ियोंवाली चट्टान के माने क्या है?"

दूसरा व्यक्ति खीझे हुए स्वर में बोला–"यहाँ पर नाहक़ वक़्त बरबाद क्यों करें? इन दोनों को आखिर वहीं पर तो ले जा रहे हैं। ये लोग अपनी आँखों से देख लेंगे।"

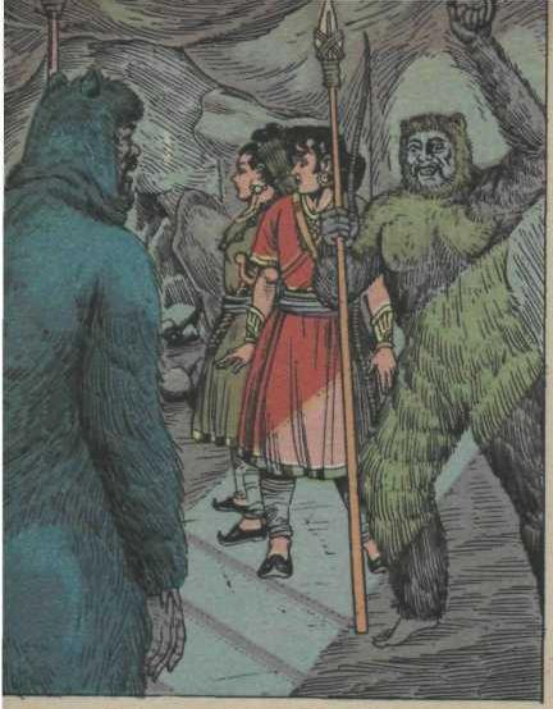

"ऐसा नहीं, पहले इन्हें उस भयंकर स्थल को दिखा दे तो ये भी काँप उठेंगे। बाद इन्हें चट्टान पर चढ़वा देंगे।" यों कहते पहला व्यक्ति हाथ उठाकर अंधेरे में थोड़ी देर तक टटोलता रहा, तब कुंडी जैसी चीज़ को पकड़कर ज़ोर से खींचा। तुरंत एक किवाड़ खुल गया जिससे सुरंग में चाँदनी की रोशनी फैल गयी।

उस रोशनी में खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने सुरंग मार्ग को ध्यान से देखा। सुरंग काफ़ी ऊँचा और चौड़ा था। उसके भीतर जाने के लिए एक रास्ता सीधे बना था, साथ ही दायें और बायें भी अन्य अनेक मार्ग थे।

"खड्गवर्मा, यह कोई छोटा सुरंग नहीं लगता है बल्कि भालू की जातिवालों ने इसमें एक ऐसा गाँव ही बना कर रखा है। जैसे ज़रूरत पड़ने पर ये लोग इसमें छिपे रहकर दुश्मन से अपनी रक्षा भी कर सके।" जीवदत्त ने कहा।

जीवदत्त के मुँह से ये बातें सुनकर भल्लूक जाति का एक आदमी ज़ोर से हँस पड़ा और बोला–"वाह, तुमने कैसे भाँप लिया? इस सुरंग में मनुष्यों के जीने के लिए कमरे ही नहीं बल्कि खाद्य पदार्थ बहुत समय तक सुरक्षित रखने के लिए गोदाम भी बनाये गये हैं। किसी न किसी तरह तुम दोनों भेड़िये की चट्टान से एक सप्ताह के अंदर इस सुरंग में पहुँच सकोगे तो तुम लोगों की ज़िंदगियाँ गुरु भल्लक की सेवा में मजे में बीत जायेंगी।"

इस पर जीवदत्त ने हँसते हुए उस व्यक्ति से कहा–"हम भी यही चाहते हैं। थोड़ा हमें भी तो दिखा दो कि भेडियों वाली चट्टान कैसी भयंकर है!"

तब भल्लूक जाति का एक सेवक खुले द्वार के यहाँ से बाहर आया। खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने एक ऊँची चट्टान पर पैर टिकाकर बाहर देखा। भल्लूक जाति के सेवकों के कहे मुताबिक़ चाँदनी की रोशनी

में भेड़ियोंवाली चट्टान बड़ी भयंकर लग रही थी। एक विशाल समतल प्रदेश के बीच चौदह-पंद्रह फुट की ऊँची एक शिला है। उस पर दो आदमी खड़े भाले लिये नीचे से ऊपर छलांग मारनेवाले भेड़ियों को धमका रहे हैं। भूख से परेशान वे भेड़िये उन आदमियों को नोच-नोचकर खाने लिए भयंकर गर्जन करते हुये शिला के चारों ओर व्यग्रता के साथ घूम रहे हैं।

"उनकी पोशाक देखने से लगता है कि उनमें एक समरवाहू है।" जीवदत्त ने कहा।

"हम नहीं जानते कि वह कौन बाहू है? मगर वह और उसका अनुचर भी चार-पाँच घंटों के बीच याने सूर्योदय के पहले उन भेड़ियों का आहार बनने जा रहे हैं। तुम दोनों भी उसी शिला पर जानेवाले हो। इसलिए तुम्हारी भी वही हालत होगी। लेकिन अगर तुम वृकेश्वरी देवी की कृपा से किसी न किसी तरह बचकर बाहर आ गये तो इसके बाद तुम गुरु भल्लूक की सेवा में..."

उसके मुँह से बात पूरी होने के पहले ही जीवदत्त ने उसे डाँटते स्वर में कहा– "अरे, तुम यूँ ही अपने गुरु की प्रशंसा मत करो। हमें यहाँ से उस शिला के पास जाना है न? अच्छी बात है! हय खुद चले जायेंगे! अब तुम अपने रास्ते चले जाओ।"

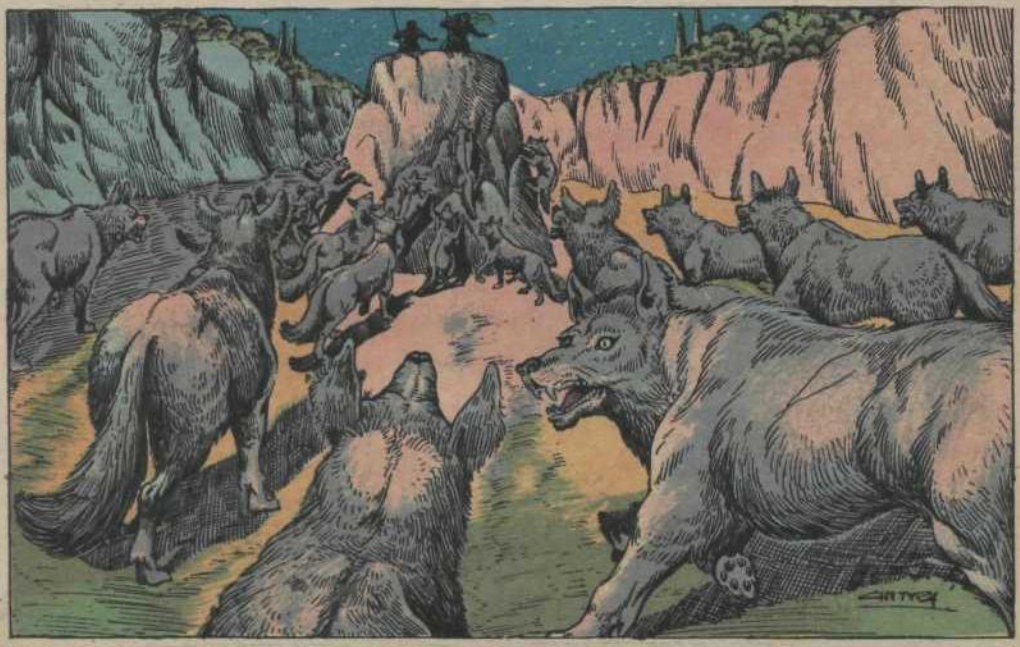

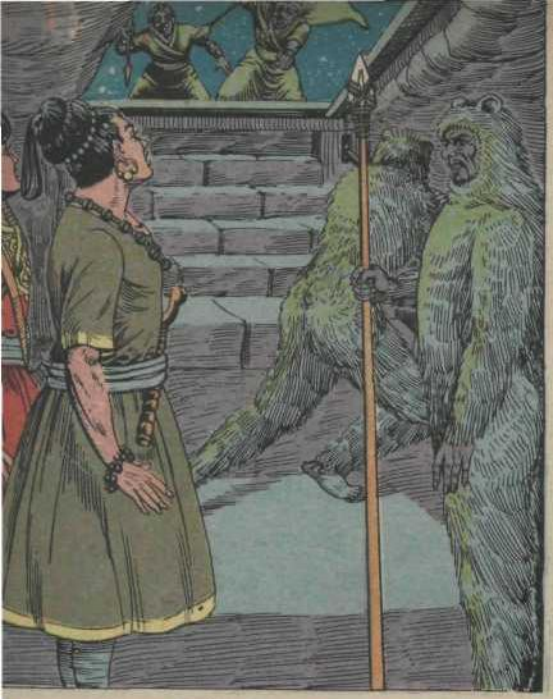

"वाह! कैसी हिम्मत! यहाँ से भेड़ियों वाली शिला के पास पहुँचना है तो द्वार के उस पार दस फुट की ऊँचाई से ज़मीन पर कूदना होगा। इसके बाद भेड़ियों के बीच से चलकर शिला पर चढ़ना होगा। इस बीच भेड़िये तुम लोगों को ज़िंदा थोड़े ही रखेंगे, बल्कि चीरकर खा जायेंगे।" भल्लूक जाति के एक सेवक ने कहा।

"अच्छी बात है। यह बताओ कि तुम लोग हमें वहाँ तक कैसे पहुँचाना चाहते हो?" खड्गवर्मा ने पूछा।

"वहाँ तक पहुँचने के लिए एक और छोटा-सा सुरंग मार्ग है! वह मार्ग तुम लोगों को भेड़ियोंवाली शिला के भीतर वाले एक पत्थर के द्वार तक पहुँचा देता है। तुम्हें उसी मार्ग से शिला पर पहुँचा देंगे।" भल्लूक जाति के सेवकों ने समझाया।

"अच्छी बात है, ऐसा ही करो। बेकार की बातें क्यों करते हो?" जीवदत्त ने कहा। लेकिन उसे इस बात का डर लगा हुआ था कि देरी हो जाने से भेड़ियों के द्वारा समरबाहू को खतरा पैदा हो सकता है। ऐसा हुआ तो इतनी सारी तक़लीफ़ें उठाकर इस सुरंग में पहुँचना बेकार साबित होगा।

इसके बाद भल्लूक जाति के सेवकों ने सुरंग के ऊपरी द्वार को बंद किया, तब सुरंग में थोड़ी दूर आगे बढ़े। वहाँ पर ज़मीन से ऊपर की ओर गयी सीढ़ियों पर चढ़ाकर खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को आगे ले गये। वहाँ उन्हें एक चौकोना पत्थर दिखाई दिया। सेवकों ने उस पत्थर में बिठायी गयी लोहे की छड़ी को ज़ोर से खींचा। पत्थर हिल उठा और बगल की ओर सरक गया। तब शिला पर खड़े समरबाहू तथा उसका अनुचर उन्हें दिखाई दिये।

पत्थर के सरकते समय जो आवाज़ हुई, उसे सुनते ही समरबाहू उछल पड़ा

और चिल्ला उठा–"अरे चन्दू! शिला के पेट में से भेड़िये ऊपर की ओर चले आ आ रहे हैं!"

खड्गवर्मा और जीवदत्त ऊपर चढ़ते हुए बोले–"समरबाहू, डरो मत! हम तुम्हारे मित्र हैं!"

खड्गवर्मा और जीवदत्त को देख समरबाहू विस्मय में आ गया। वह कुछ कहना चाहता था, मगर उसके मुँह से बोल नहीं फूटे। इतने में भल्लूक जाति के सेवक पत्थर को ऊपर उठाकर उस द्वार को बंद करते हुए बोले–"ओह, तुम सब दोस्त ही हो! बड़ी अच्छी बात है! तब तो सब एक साथ भेड़ियों का खाना बन जाओ!"

खड्गवर्मा ने क्रोध में आकर उनकी ओर देखा, तभी भारी आवाज़ के साथ पत्थर का दर्वाज़ा बंद हो गया। जीवदत्त ने समरबाहू के कंधे को थपथपाते हुए कहा–"समरबाहू, डरो मत! स्वर्णाचारी के द्वारा हमने सारी बातें सुन लीं। वह हमारा पुराना मित्र है! हम सब सुरक्षित रूप से भेड़ियों की इस शिला से अपने निवास स्थानों में पहुँच जायेंगे। मेरी बात पर यक़ीन करो।"

"हम प्राणों के साथ यहाँ से बाहर जा सकेंगे? यह कैसे मुमक़िन होगा? इस शिला के बीच से सुरंग में जानेवाले द्वार

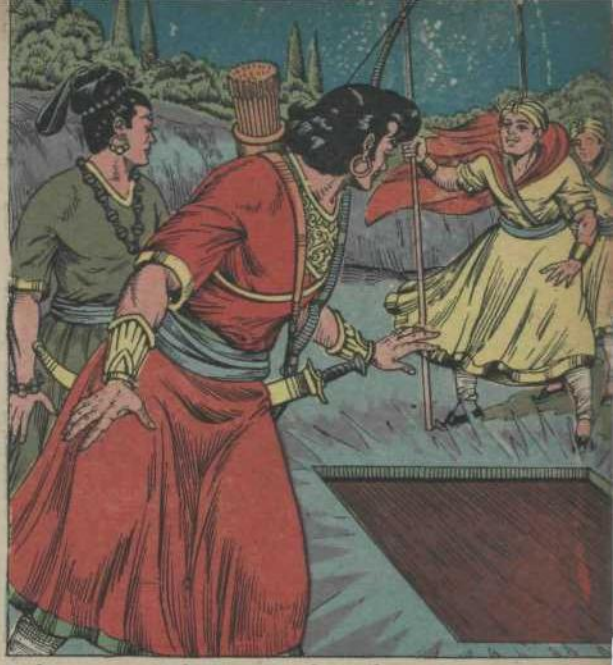

को उन दुष्टों ने बंद कर दिया है। शिला से उतरकर जाना चाहे तो चारों तरफ़ भूखे भेड़िये हैं।" समरबाहू ने निराशा भरे स्वर में कहा।

"वे ही भेड़िये और हमें बन्दी बनाने वाले सब हमें ख़ुद रास्ता दिखायेंगे। हम ज़मीन में स्थित सुरंग में प्रवेश करके इस वक़्त चारों तरफ़ दुर्ग के प्राचीर जैसे बने टीलों के पहाड़ी प्रदेश के मध्य–इस शिला पर पहुँच गये हैं। ऊपर हमें चाँद दिखाई दे रहा है। याने इन दुष्टों के निवास करनेवाले सुरंग तथा इस प्रदेश के बीच आने-जाने के लिए एक-दो द्वार ही हैं।" जीवदत्त ने कहा।

"आपका कहना ठीक है। मगर मेरी समझ में नहीं आता कि हम इन भेड़ियों तथा गुरु भल्लूक के सेवकों से बचकर यहाँ से कैसे भाग सकते हैं?" समरबाहू ने संदेह प्रकट किया।

जीवदत्त कुछ कहने ही जा रहा था तभी एक भूखा भेड़िया उछलकर ऊपर कूद पड़ा, और शिला की फटास में से एक में अपने पैर जमाकर शिला पर रेंगने की कोशिश करने लगा। तब खड्गवर्मा ने तलवार से उसके सिर पर दे मारा और उसकी गर्दन पकड़कर ऊपर खींचकर उसे शिला पर गिरा दिया।

"खड्गवर्मा, तुमने बड़ा अच्छा किया।" यों जीवदत्त ने खड्गवर्मा की तारीफ़ की और समरबाहू से पूछा–"समरबाहू, इस मरे हुए भेड़िये से हमारा काम पड़ेगा। क्या तुम जानते हो कि भल्लूक जाति के सेवक इन भेड़ियों को किस वक़्त खाना देते हैं?"

"मैंने उन दुष्टों के बात करते सुना है, इन खूंख्वार जानवरों को वे लोग सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय किसी जानवर का मांस ला देते हैं। मगर उन्हें खाना देने की यह तक़लीफ़ भी न होगी। क्योंकि इस बीच ये भेड़िये हमें चीरकर खा डालेंगे।"

"खड्गवर्मा, हमने पहले जिस सुरंग के द्वार को देखा, उसी में से वे लोग भेड़ियों को खाना देते होंगे।" जीवदत्त ने कहा।

खड्गवर्मा ने दूर पर ज़मीन से दस फुट की ऊँचाई पर दीवार में बिठाये गये दर्वाजे को देख कहा–"भेड़ियों को खाना देने के लिए वही एक मात्र द्वार मालूम होता है। तुम्हारा क्या विचार है? कोई अच्छी योजना बनाने जा रहे हो?"

"गरु भल्लूक ने इस विचार से हमको अपने हथियारों के साथ यहाँ पर छोड़ दिया है कि भेड़ियों की चट्टान पर से

उसके बंदी जान से बाहर नहीं निकल सकेंगे। यही उसके तथा उसके अनुचरों के लिए खतरे का कारण बनने जा रहा है।" जीवदत्त ने चतुर्दिक देखते हुए कहा।

इसके बाद उनके बीच कोई वार्तालाप न हुआ। तब तक रात गहरी हो चली थी। इसलिए एक व्यक्ति जागता रहा, बाक़ी लोग उसी शिला पर लेटकर निश्चिंत सो गये।

सूर्योदय के होते-होते शिला के चतुर्दिक रहनेवाले भेड़िये भयंकर गर्जन करते सुरंग मार्ग की ओर के द्वार के नीचे टहलने लगे। उनके गर्जन सुन सब लोग जाग पड़े। जीवदत्त खड्गवर्मा को द्वार दिखाते बोला–"हमारी कल्पना सच निकल गयी। भल्लूक जाति के सेवक द्वार को खोल भेड़ियों को खाना फेंकने जा रहे हैं। तुम अपने धनुष और बाण लेकर द्वार की ओर निशाना बनाकर तैयार रहो।"

जीवदत्त के कहे अनुसार खड्गवर्मा बाण का निशाना बनाकर शिला पर इतमीनान से बैठ गया। समरबाहू इस दृश्य को देख डरते हुए बोला–"अगर हम उन दुष्टों में से एकाध व्यक्ति को मार डालते हैं तो क्या फ़ायदा होगा? बाक़ी लोग भड़क जायेंगे और हमें कच्चा चबा डालेंगे।"

समरबाहू की बातों पर हँसते हुए जीवदत्त ने कहा–"समरबाहू, इस वक़्त

वे दुष्ट हमें भेड़ियोंवाली चट्टान पर चढ़वाकर हमारा अंत करना चाहते हैं। भेड़ियों के द्वारा सारा बदन चिरवाकर मरने से बढ़कर बुरी मौत और क्या हो सकती है?"

जीवदत्त की बात पूरी भी न हो पायी थी कि सुरंग मार्ग के ऊपर का दर्वाज़ा भयंकर ध्वनि के साथ खुल गया। भल्लूक जाति के दो व्यक्ति जानवर के माँस से भरे बड़े टोकरे को उठाकर माँस फेंकने जा रहे थे। उसी समय जीवदत्त का इशारा पाकर खड्गवर्मा ने निशाना देख बाण छोड़ दिया। बाण सीधे जाकर एक के माथे पर जा लगा। वह चिल्लाकर गिर पड़ा। उसके साथ दूसरा सेवक भी माँस के टोकरे के साथ सुरंग के मार्ग में जा गिरा।

तभी सुरंग में कोलाहल मच गया। वृकेश्वरी देवी के समक्ष पद्मासनं लगाकर ध्यान मुद्रा में बैठे गुरु भल्लूक का ध्यान भंग हुआ। वह गुस्से में आकर उठ खड़ा हुआ और चिल्ला उठा–"यह कैसा कोलाहल है! भेड़ियोंवाली चट्टान के पास यह कैसी चिल्लाहट है? क्या उन्हें अब तक खाना नहीं दिया? या कल हम जिन क़ैदियों को लाये, उन्हें तो नहीं खा रहे हैं?"

"गुरु भल्लूक! खतरा पैदा हो गया है। भेड़ियोंवाली चट्टान पर रहनेवाले बंदियों में से एक ने हमारे अनुचर को बाण से मार डाला है। उसके पास और बाण हैं। अब हमें क्या करना है?" भल्लूक जाति के एक सेवक ने उसी वक़्त वहाँ पर पहुँचकर कहा।

गुरु भल्लूक ने आँखें लाल करके गरजकर कहा–"मैं वृकेश्वरी देवी का प्रिय भक्त हूँ। मेरे सामने इन तुच्छ मानवों की हस्ती ही क्या है? अभी मैं उन सब को अपने पंचशूल की आहुति बना देता हूँ।" यों कहते गुरु भल्लूक सुरंग मार्ग की ओर चल पड़ा।

(और है)

जनता का बल

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, मैं तुम्हारे प्रयत्न की प्रशंसा करता हूँ, लेकिन कभी कभी ऐसा भी होता है कि जो कार्य प्रयत्न के द्वारा सफल नहीं होते वे क़िस्मत के कारण सफल हो जाते हैं। इसके उदाहरण स्वरूप मैं तुम्हें केकय के राजा उपाहारवर्मा की कहानी सुनाता हूँ। श्रम को भुलाने के लिए सुनो।"

बेताल यों कहने लगा : प्राचीन काल में केकय देश पर राजा उपाहारवर्मा शासन करता था। वह बड़ा ही शक्तिशाली था। उसके पास बड़ी सेना और संपत्ति भी थी। इसलिए पड़ोसी राजा उस देश की ओर ताकने से भी डरते थे। जनता भी ऐसे अच्छे राजा को पाकर गर्व

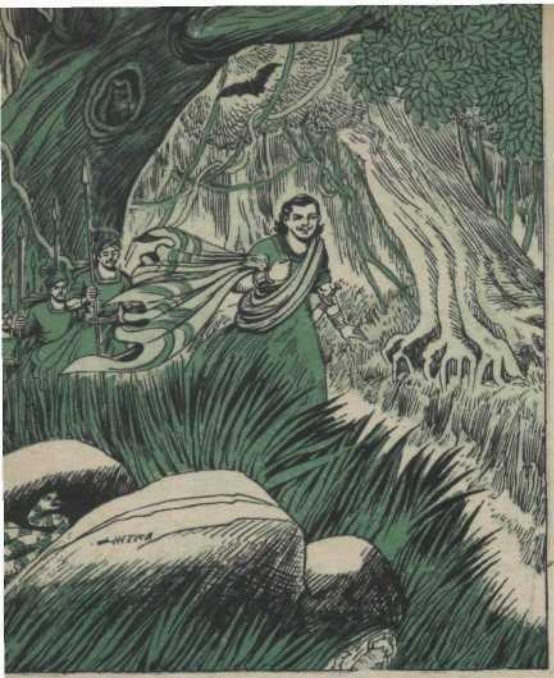

करती थी। राजा उपाहारवर्मा शत्रु के भय के अभाव में बड़ा ही घमण्ड तथा लापरवाह बन गया था।

एक बार केकय देश के दक्षिण प्रदेश में कुछ बलवान लोगों ने बलवा करके अराजकता फैला दी। यह समाचार मिलते ही उपाहारवर्मा ने विद्रोहियों पर कोई कठिन कार्रवाई नहीं ली, बल्कि अपने अधिकारियों द्वारा यही घोषणा करवाई कि विद्रोही अगर राजद्रोह करेंगे तो उन्हें कठिन दण्ड दिया जायगा। इसके बाद राजा मौन रह गया।

कुछ समय बाद राजा के पास यह समाचार आया कि विद्रोही एक भारी सेना के साथ राजधानी पर हमला करने जा रहे हैं। इस पर भी राजा उपाहारवर्मा बिलकुल विचलित नहीं हुआ। उसने सोचा कि विद्रोहियों की सेनाएँ अपनी सेनाओं के साथ युद्ध करेंगी तो वे इस प्रकार नष्ट हो जायेंगी जैसे पतंगे आग में कूदकर जल जाती हैं।

लेकिन ऐसा नहीं हुआ। युद्ध के मैदान में राजा की सेनाएँ तितर-बितर हो गयीं, उसके अनेक सैनिक दुश्मन के हाथों में मारे गये, और कुछ सैनिक विद्रोहियों की सेना में मिल गये, बाक़ी सैनिक भाग गये, अब विद्रोही नेता राजधानी की ओर बढ़ा।

इस कारण राजा उपाहारवर्मा को जो कभी किसी के हाथों में पराजित न हुआ था, कुछ धन तथा थोड़े से सैनिकों के साथ गुप्त मार्ग से होकर राजमहल से भाग जाना पड़ा। उसी दिन विद्रोही नेता ने राजमहल में प्रवेश करके केकय देश के नये राजा के रूप में अभिषेक कराया।

शत्रु राजधानी में प्रवेश करके विजयोत्सव मना ही रहे थे, तब उपाहारवर्मा ने अपने अनुचरों के साथ शीघ्र चन्द्रभागा नदी को पारकर मद्रदेश में प्रवेश किया और अपने मित्र मद्र राजा का आश्रय माँगा।

मद्रराजा ने उपाहारवर्मा के प्रति बड़ी सहानुभूति दिखायी और कहा—"आप

चिंता न कीजिये। विजय और पराजय भाग्य के अधीन हैं। मैं सब प्रकार से आपकी सहायता करूँगा। आप मेरी सेनाओं को ले जाकर दुश्मन का अंत कीजिये और अपने राज्य को पुनः प्राप्त कर लीजिये।"

अपने मित्र की बातें सुनने पर उपाहारवर्मा का आत्मविश्वास बढ़ गया। उसने सोचा कि इस बार निश्चय ही उसकी विजय होगी। यह विचार करके मद्र सेनाओं को साथ ले केकय देश पर चढ़ाई कर दी। चन्द्रभागा नदी के तट पर दोनों सेनाओं के बीच लड़ाई हुई। उस लड़ाई में मद्रदेश की सेनाएँ बुरी तरह से हार गयीं। उस युद्ध में उपाहारवर्मा अपने घोड़े को भी खो बैठा, किसी तरह शत्रु राजा के हाथ में पड़ने से बच गया और अपने प्राणों के साथ बचकर जंगल के रास्ते चल पड़ा।

राजा के साथ अब कुछ न बचा था। उसका सर्वनाश हो गया था। उसका घमण्ड भी चूर्ण हो गया था। जैसे-तैसे उसे अपना पेट पालना पड़ा। वह अनेक दिन पैदल चलकर ब्रह्मवर्त में पहुँचा। उन दिनों में वह एक छोटा सा राज्य था। उपाहारवर्मा की तुलना में उस देश का राजा अत्यंत छोटा था। फिर

भी उपाहारवर्मा उसके पास गया। अपना परिचय दिये बिना उसने राजा से कहा–"महाराज, मैंने बड़ी सेनाओं का संचालन किया है। आप मुझे अपने सेनापति नियुक्त कीजिये।"

वहाँ के राजा ब्रह्मदत्त ने कोई आपत्ति नहीं उठायी। उपाहारवर्मा को अपना सेनापति बनाया। कुछ दिन बीत गये। एक बार सिंधुदेश की सेनाएँ ब्रह्मदत्त के देश से होकर जैत्रयात्रा करते जाते हुए उस देश के गाँवों को लूटने लगीं। इस पर राजा ब्रह्मदत्त ने क्रुद्ध हो उपाहारवर्मा से कहा–"हम लोग सिंधु देश की सेनाओं के साथ युद्ध करेंगे।"

ये बातें सुनकर उपाहारवर्मा चकित रह गया। ब्रह्मदत्त की सेनाएँ सिंधु-देश की सेनाओं के समक्ष ठहर नहीं सकती थीं। इसलिए उसने सोचा कि वह इस युद्ध में एक और पराजय पानेवाला है।

राजा ब्रह्मदत्त ने सैनिकों में उत्साह भर दिया। उसीने सेना का संचालन करके शत्रु सेनाओं का सामना किया। युद्ध बहुत जल्द समाप्त हो गया। सिंधु देश की सेना ने सपने में भी नहीं सोचा था कि उन पर हठात् ऐसा भयंकर हमला होगा। ब्रह्मदत्त की सेनाओं ने सिंधु-सेना पर धावा बोल दिया, भागनेवालों का वध किया, खेमों में आग लगा दी, इस बीभत्स को देख सिंधु सैनिकों की जैत्रयात्रा वहीं समाप्त हो गयी।

कुछ ही घंटों बाद राजा ब्रह्मदत्त विजय के उत्साह में जब राजधानी को लौट रहा था, तब उपाहारवर्मा ने पूछा– "महाराज, हमारे थोड़े से सैनिकों ने शत्रु की बड़ी सेना को आसानी से हरा दिया, क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है? मैं आपके यहाँ प्रच्छन्न रूप में रहनेवाला केकय देश का राजा हूँ। मेरी सेना में से आधी संख्यावाली शत्रु सेना ने मुझे पराजित कर गद्दी से उतार दिया है।"

इस पर राजा ब्रह्मदत्त ने हंसकर कहा– "युद्ध में सैनिकों की संख्या के बल पर विजय आधारित नहीं होती, बल्कि सैनिकों की विजय-कामना पर आधारित होती है।"

अपना परिचय देने के बाद उपाहारवर्मा को राजा ब्रह्मदत्त के दरबार में नौकरी करने की इच्छा नहीं हुई। उसका मन अपने देश के बारे में व्याकुल होने लगा। अपना पेट पालने के लिए दूसरे देशों में अज्ञात रहने के बदले, अपना नाम बदलकर अपने ही देश में रहना कहीं अच्छा है। इसी विचार से उपाहारवर्मा अपने देश को चल पड़ा। उसने चन्द्रभागा नदी को पारकर केकय देश की सीमा पर क़दम रखा ही था, तभी कुछ सैनिकों ने

उसके निकट पहुँच कर पूछा–"तुम कौन हो?"

"तुम लोग मेरा परिचय क्यों जानना चाहते हो? इससे तुम्हारा क्या फ़ायदा होगा?" उपाहारवर्मा ने पूछा।

"हमारे राजा अजनबियों पर निगरानी रख रहे हैं।" एक सैनिक ने जवाब दिया।

"तुम्हारा राजा अजनबियों से डरते क्यों हैं?" उपाहारवर्मा ने फिर पूछा।

"हमारे राजा को क़िस्मत की वजह से यह राज्य मिल गया है। हमारे पुराने राजा उपाहारवर्मा को जीतकर ये राजा बन गये हैं। ये इसलिए डरते हैं कि कहीं हमारे पुराने राजा आकर यह राज्य छीन न ले!" एक सैनिक ने असली बात बतायी।

उपाहारवर्मा यह सोच नहीं पाया कि इतने साल बाद भी यह विद्रोही राजा उसके बारे में डरते क्यों हैं?

चाहे जो हो जाय, यह सोचकर उपाहारवर्मा ने कहा–"मैं ही वह उपाहारवर्मा हूँ। तुम्हारा राजा मेरे पास बड़ी सेना के रहते मुझ पर हमला कर बैठा था, ऐसी हालत में मुझे इस हालत में अकेले देखकर भी क्यों डरते हैं? यह बात मुझे अचरज की मालूम होती है!"

उपाहारवर्मा के मुंह से यह बात निकलते ही सैनिक उसके पैरों पर गिर पड़े और बोले–"महाराज, हमने आपको पहचाना नहीं, आप जल्दी यहाँ से लौट जाइये। वरना आपके प्राण नहीं बचेंगे!"

"मैं ज़िंदा रहकर भी मरनेवाले के समान हूँ। खोने के लिए मेरे पास प्राणों के सिवाय और कुछ नहीं है। मैं अपने ही राज्य में मरूँगा। ठीक है न?" उपाहारवर्मा ने उत्तर दिया।

इसके बाद सिपाहियों ने आपस में बात कीं, उनमें से एक सैनिक की पोशाक राजा को पहना कर अपने निवास में ले

गये। राजधानी में उपाहारवर्मा के लिए अपनी जान देने सभी वर्ग और जातियों के लोग थे। उन्हें अपने राजा के लौट आने की खबर कुछ ही क्षणों में लग गयी। तुरंत एक योजना तैयार हुई। राज महल में ही विद्रोही राजा अपने सेवकों के हाथों में मारा गया। उसी दिन विद्रोह में भाग लेनेवाले सभी लोगों को कारागार में बंद कर दिया गया। दूसरे ही दिन उपाहारवर्मा अपनी गद्दी पर बैठा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, विद्रोही राजा उपाहारवर्मा को पराजित कर भी उससे क्यों डरता था? उपाहारवर्मा ने सब प्रकार के यत्न करके भी विजय न पायी और आखिर बिना किसी प्रकार के प्रयत्न के विजय कैसे पायी? इन सवालों का जबाब जानते हुए भी न दोगे, तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जायगा!"

इस पर विक्रमार्क ने यों कहा–"हार जाने पर भी उपाहारवर्मा के प्रति जनता में अपार सहानुभूति और विश्वास रहे होंगे। इसका कारण विद्रोही राजा का दुष्ट शासन भी हो सकता है। चाहे जो भी हो, विद्रोही राजा यह सोचकर डर गया कि उपाहारवर्मा को जनता का समर्थन प्राप्त है! जनता के समर्थन का सही ढंग से काम में न लाये जा सकने के कारण वह दो बार पराजित हुआ। यह बात स्पष्ट है कि वह केवल सैनिक बल पर अधिक विश्वास करता है। मगर उसे पुनः राज्य दिलानेवाली शक्ति जनता का बल है। यह बात राजा ब्रह्मदत्त से उपाहारवर्मा को जान लेनी थी। मगर वह जान नहीं पाया। इस बात में ज़रा भी संदेह नहीं है कि ब्रह्मदत्त से सैनिकों ने अपने शत्रु का सामना सैनिकों की तरह नहीं, बल्कि प्रजा के रूप में ही किया है।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

सोमदेव की किस्मत

राजकुमार सोमदेव समुद्र पर यात्रा कर रहा था, तभी पानी के नीचे रहने वाली शिला से टकराकर उसकी नौका टूट गयी। तब सोमदेव ने समुद्र की लहरों पर एक लक्कड़ देखा। उस पर लेटकर वह अपने प्राण बचा पाया, लेकिन बाक़ी सब लोग समुद्र में डूब गये।

सोमदेव उस लक्कड़ पर बेहोश हो दो दिन तक समुद्र में बहता गया, आखिर वह एक विचित्र टापू में जा पहुँचा। लहरों ने उसे समुद्र के किनारे फेंक दिया।

सूरज की किरणों के स्पर्श से सोमदेव होश में आया। उसने आँखें खोलकर देखा कि वह किनारे पर लग गया है। उसके निकट ही एक छोटा-सा टीला था। वह बहुत थक चुका था। धीरे से उठ खड़ा हुआ और बड़ी मुश्किल से टीला चढ़कर दूसरी ओर उतरा। उसने देखा कि दूर तक आलू की खेती फैली हुई है। फसल हरी-भरी और देखने में अत्यंत मनोहर लग रही थी। वह कमज़ोर था, उसका सिर चकराने लगा। वह बेहोश हो आलू के पौधों के बीच लुढ़क पड़ा। होश में आने पर उसने देखा कि वह एक सुंदर कमरे में बिस्तर पर लेटा हुआ है। एक विचित्र आदमी ने उसकी ओर झुककर देखा और क्रूर हँसी हँस दी। उसके हाथ में एक लंबा भाला था।

"मैं कहाँ हूँ?" सोमदेव ने पूछा।

"आलूपुर के राजा पाटूंगा के राजमहल में।" विचित्र आदमी ने उत्तर दिया।

सोमदेव ने अपने हाथ-पैर हिलाना चाहा, लेकिन वे चारपाई से बाँधे गये थे।

"मुझे इस तरह क्यों बाँध दिया है?" सोमदेव ने पूछा।

"पाटूंगा महाराजा का आदेश है! तुमने हमारे देश में बिना अनुमति के प्रवेश

ए. सी. सरकार, जादूगर

किया है। इसलिए तुम्हें मृत्युदण्ड दिया जायगा।" एक सेवक ने कहा।

अपनी बदक़िस्मती की याद करके सोमदेव ने गहरी सांस ली। वह मणिद्वीप की राजकुमारी के साथ विवाह करने के विचार से घर से सपरिवार नौका पर चल पड़ा था। मगर क़िस्मत ने उसका साथ नहीं दिया। इस कारण वह एक विचित्र टापू में जंगलियों के हाथों में पड़कर मृत्यु के मुंह में जा रहा है। उसका दिमाग काम नहीं कर रहा था, अतः वह थककर सो गया।

एक सेवक आकर खाट से उसे मुक्त करने लगा। तब जाकर उसकी नींद खुली। वह सेवक उसे राजमहल से कारागार तक लाया। एक कमरे में ढकेल दिया।

"मुझे तुम यहाँ पर क्यों लाये हो?" सोमदेव ने पूछा।

"आज तक तुम बीमार थे। आज से तुम भी एक क़ैदी हो।" सेवक ने कहा।

अंधेरी कोठी पर ताला लगाकर सेवक चला गया। सोमदेव अपनी बदक़िस्मती पर विचार करने लगा।

थोड़ी देर बाद उसे लगा कि उसकी दीवार के पीछे से कोई दस्तक दे रहा है। सोमदेव ने भी उस दीवार पर दस्तक दिया। तुरंत उस पार से जवाब के रूप में दो बार दस्तक देने की आवाज़ आयी।

यह सोचते सोमदेव ने दीवार में ढूंढना शुरू किया कि कहीं दीवार में कोई छेद हो, और उस पार का व्यक्ति कौन होगा? लेकिन दीवार में कोई छेद दिखाई न दिया।

सोमदेव हसेशा अपने कमरबंद में एक चाकू रखता था। उसने चाकू निकाला, दीवार की एक ईंट को निकाला। उस छेद में से झांककर देखा तो उसे उस पार के कमरे में एक असाधारण सुंदरी दिखाई दी। उसकी पोशाकें और केश बिखरे हुए थे, फिर भी वह एक राजकुमारी से लगती थी।

"तुम कौन हो?" सोमदेव ने पूछा।

"मैं इस बुरी हालत में रहनेवाली मणि द्वीप की राजकुमारी हूँ। लेकिन तुम कौन हो?" युवती ने पूछा।

युवती का उत्तर सुनकर सोमदेव उछल पड़ा। वह जिस युवती के वास्ते समुद्री यात्रा कर रहा था, वही मणि द्वीप की राजकुमारी हीरावती है यह!

"मैं एक अभागा राजकुमार हूँ। मेरी नौका के टूट जाने पर दुर्भाग्य से यहाँ पर आ पड़ा हूँ। इस विचित्र देश में तुम कैसे आ गयी?" सोमदेव ने पूछा।

"मैं भी नौका के टूट जाने के कारण यहाँ पहुँच गयी हूँ। मैं अपने फूफा के देश में जा रही थी, मगर बीच समुद्र में तूफ़ान उठने के कारण हमारी नौका डूब गयी। लहरों ने मुझे किनारे की ओर फेंक दिया है। इस देश का राजा पाटूंगा काना और कुबड़ा है। वह मेरे साथ विवाह करना चाहता है, मैंने इनकार किया है। इसलिए उसने मुझे यहाँ पर बंदी बनाया है। मैं नहीं जानती कि मेरे साथ कैसा व्यवहार करेगा, मगर उस कुबड़े के साथ शादी करने की अपेक्षा मौत ही मेरे लिए बेहतर है।" हीरावती ने आंसू बहाते हुए कहा।

इतने में किसी के आने की आहट हुई। सोमदेव दीवार की छेद को बंद करके

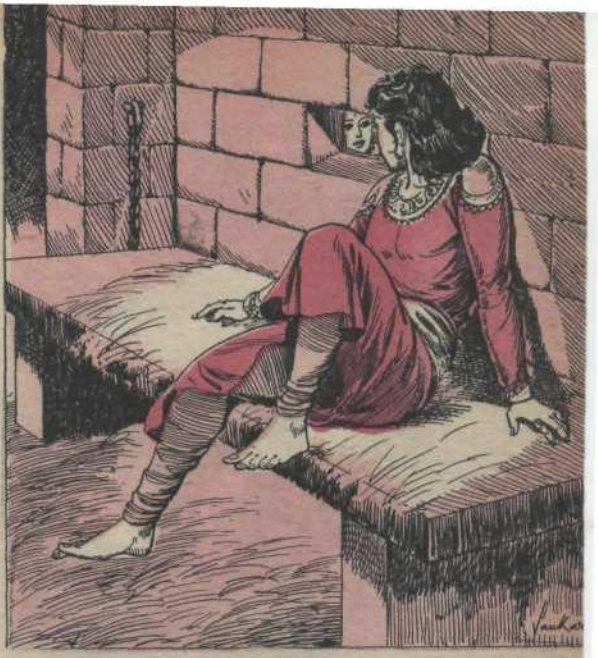

बैठ गया। एक सेवक खाना लाकर कमरे में रखकर चला गया।

थोड़ी देर बाद सोमदेव ने छेद में से झांककर कहा–"राजकुमारी, क्या तुम इस देश के बारे में थोड़ी-बहुत जानकारी रखती हो?"

"इस देश में आने पर राजा ने मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया है। मैं स्वेच्छा के साथ सारे देश में घूमती हूँ और इस देश के बारे में मैंने सारी बातें जान ली हैं। इस देश की सारी संपत्ति आलू की खेती पर निर्भर है। यहाँ पर बिना खेती किये आलू पैदा होता है। यहाँ की ज़मीन आलू की खेती के लिए

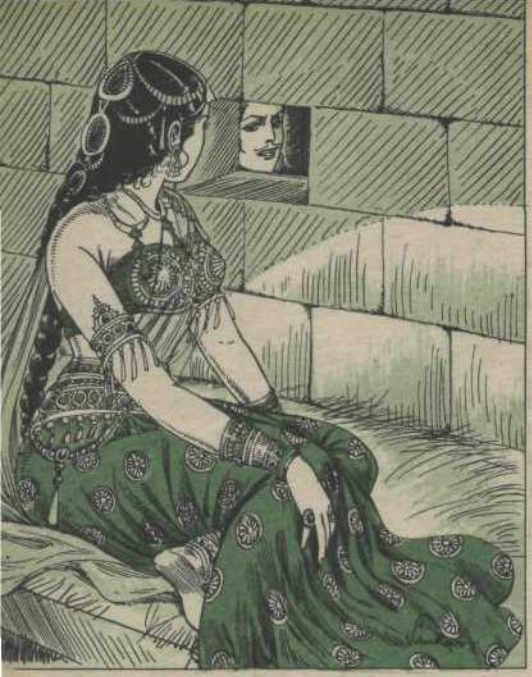

बड़ी ही अनुकूल है। यहाँ की आलू की पैदावर को विदेशों में बेचकर यहाँ का राजा खूब धन कमाता है। यहाँ के लोग सिवाय आलू के कुछ खाते भी नहीं। शायद तुम जान गये होगे कि हमें जो खाना दिया जाता है, उसमें आलू के द्वारा बनाये गये तरह-तरह के व्यंजन होते हैं।" हीरावती ने समझाया।

"इस टापू में पहुँचते ही मैंने सिर्फ़ आलू के ही खेत देखे हैं। मुझे लगता है कि इसी आलू के द्वारा हम इस देश से भाग सकते हैं। राजकुमारी, मैंने एक उपाय किया है। मैंने अपने एक मित्र के यहाँ जादू की विद्याएँ सीख ली हैं। तुम्हारी सहायता मिलेगी तो शायद मेरी योजना सफल हो सकती है।" सोमदेव ने कहा।

"बताओ, मुझे क्या करना होगा? यहाँ से मुक्त होने के लिए मुझ से जो भी करने को कहोगे, मैं करने के लिए तैयार हूँ।" हीरावती ने कहा।

"इस बार जब सेवक तुम्हारे पास आयेगा, तब तुम उससे कहो कि तुम्हारा मन बदल गया है और तुम राजा के साथ विवाह करने को तैयार हो। तब तुम को सेवक राजा के पास ले जायेंगे। तुम राजा से विवाह करने के लिए एक महीने की मियाद मांगो। तब तुम को राजमहल में घूमने तथा कारागार में जाने का भी मौक़ा मिलेगा। तुम जो भी मांगोगी, राजा इनकार न करेगा। एक-दो दिन में मैं अपनी युक्ति का प्रयोग करके तुम को यहाँ से मुक्त करूँगा।" सोमदेव ने समझाया।

राजकुमारी सोमदेव के कहे मुताबिक़ करके कारागार से मुक्त हो गयी। उस वक़्त से राजा राजकुमारी के प्रति अत्यंत आदर दिखाने लगा। सोमदेव के मांगने पर राजकुमारी ने उसे थोड़ा सोना भी दे दिया।

सोमदेव ने वह सोना पहरेदार को भेंट में दिया और कहा–"देखो भाई, मैं

जिस कांच के गिलास से पानी पीता हूँ, वह बहुत ही छोटा है। इसलिए मुझे दो बड़े-बड़े गिलास जो ऊँचे हो, दिलाओ, तुम्हारा पुण्य होगा।"

पहरेदार को सोमदेव की इच्छा कोई खतरनाक प्रतीत नहीं हुई। इसलिए उसने दो ऊँचे कांच के गिलास लाकर सोमदेव के हाथ दिये। अलावा इसके घूस लेने की वजह से वह सोमदेव को सारी बातें सुनाने लगा।

"भाई, सुम्हारा देश बड़ा सुंदर है। यहाँ पर अनोखे आलू पैदा होते हैं।" सोमदेव ने पहरेदार से कहा।

"हाँ, हाँ, तुम बिलकुल ठीक कहते हो। हम जैसे आलू यहाँ पैदा करते हैं, वैसे दुनिया में और कहीं पैदा नहीं होते।" सेवक ने गर्व के साथ कहा।

"लेकिन मैं चाहूँ तो ऐसा कर सकता हूँ कि तुम्हारे देश में एक भी आलू पैदा न होगा। मैं आज्ञा दूं तो आलू के बढ़ने से रुक जायेंगे। कल मैं तुम को दिखला दूंगा कि आलू मेरी बातें कैसे सुनते हैं? मुट्ठी भर का एक आलू कल तुम अपने साथ लेते आओ, और राजा को सपरिवार बुला लाओ। मैं उन्हें अपनी शक्ति का परिचय दूंगा।" सोमदेव ने कहा।

सोमदेव की शपथ की बात पल भर में राजा के कानों में पड़ी। दूसरे दिन सवेरे राजा अपने अनुचरों के साथ कारागार में आ पहुँचा।

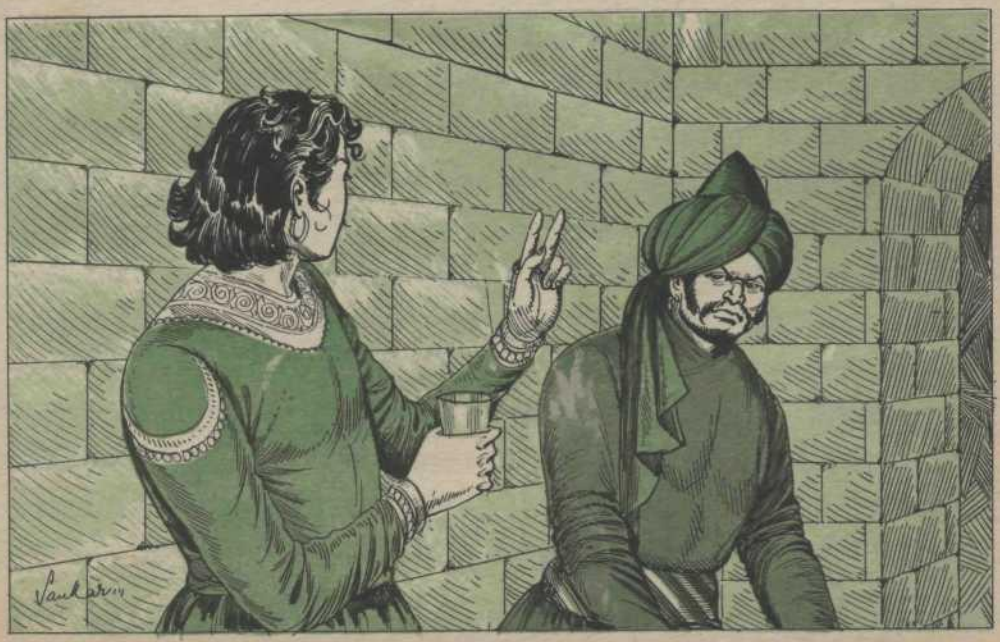

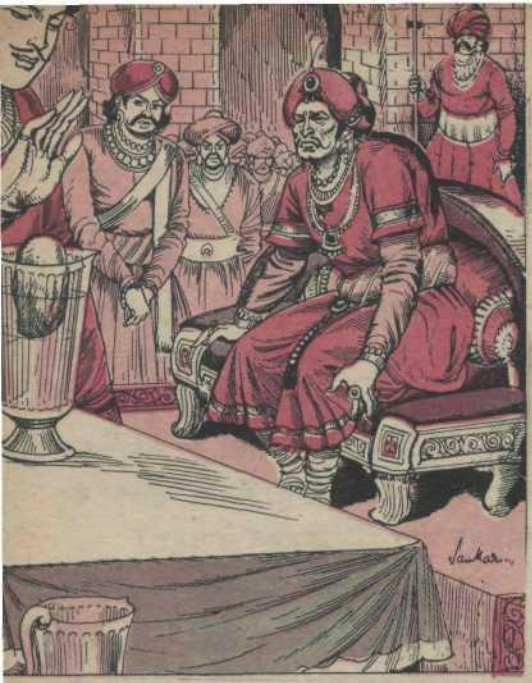

सोमदेव ने पहले एक ऊँचा कांच का गिलास ऊपर उठाकर सबको दिखाया। वह गिलास पानी से भरा था। राजा के हाथ से उसने मुट्ठी भर का आलू ले लिया। आलू को सोमदेव ने धीरे से पानी में छोड़ दिया। आलू धीरे धीरे पानी में उतरने लगा। आलू गिलास के मध्य भाग तक पहुँचा ही था कि सोमदेव चिल्ला उठा–"ठहर जाओ।" आलू पानी में नीचे उतरने से बीच में रुक गया। सोमदेव ने मंदहास करते राजा और उसके अनुचरों की ओर देखा। उनके चेहरों पर आश्चर्य झलक रहा था। इस पर सोमदेव ने उन लोगों से कहा–"आप लोगों ने स्वयं देख लिया कि आलू मेरी आज्ञाओं का पालन कर रहा है। मैं जो आज्ञा दूँ, आलू उसका पालन करेगा। अब मैं मंत्र पढ़कर उसे नीचे भेज देता हूँ।"

इसके बाद सोमदेव ने कोई मंत्र पढ़ा और गिलास के पानी को हिलाया। आलू पानी में नीचे उतरता गया और नीचे जा बैठा।

"इसको छोड़ दो। यह जो चाहे सो दे दो। इसकी शक्तियाँ अद्‌भुत हैं। यह हमारी आलू की खेती का सर्वनाश कर सकता है।" राजा ने घबरा कर आदेश दिया।

इसके बाद सोमदेव को कारागार से मुक्त करके राजा और उसके अनुचरों ने सिर झुकाकर सोमदेव को प्रणाम किये।

"हमको क्षमा कीजिये! हमारे ऊपर कृपा करके कुछ दिन तक हमारा आतिथ्य स्वीकार कीजिये। हमारी गलतियों को भूल जाइये। आप जो चाहे सो यहाँ से अपने साथ ले जाइये।" राजा ने गदगद कंठ से कहा।

तब सोमदेव को पालकी पर बिठाकर राजमहल में ले गये। राजा ने उसे अनेक अमूल्य उपहार दिये, और पूछा–"बताइये, आपकी क्या आज्ञ है?"

"जहाँ तक हो सके, मुझे जल्दी ही अपने देश को लौटना है। एक अच्छी नौका तैयार करवा दीजिये।" सोमदेव ने कहा।

इसके बाद वह हीरावती की ओर मुड़कर पूछा–"तुम्हारी क्या इच्छा है? तुम राजा के साथ विवाह करके यहीं पर रहना चाहती हो?"

"नहीं, यदि आपको कोई आपत्ति न हो, तो आपके साथ चलकर आपकी गृहस्थी को संभाल लूँगी।" हीरावती ने उत्तर दिया।

एक सप्ताह बाद आलूपुर के बंदरगाह से एक नौका समुद्र पर रवाना हो गयी। उसमें हीरावती और सोमदेव थे।

यात्रा के बीच एक दिन हीरावती ने गुप्त रूप से सोमदेव से पूछा–"मैंने आपके पास एक लंबी कलछी और थोड़ा नमक ही भेजा था। आप अपना जादू कैसे कर सके?"

"वह तो बहुत ही आसान तरीक़ा था। तुमने जो नमक दिया, उससे गाढ़ा नमकीला पानी तैयार किया। एक कांच के गिलास में आधे भाग तक साधारण पानी डाल दिया। तब कलछी से उसी गिलास में नमकीला पानी धीरे से भर दिया। बोझीला नमकीला पानी नीचे उतर गया। निर्मल जल ऊपर आ गया। जहाँ दोनों तरह के पानी मिलते थे, उस जगह पर निशाना बनाया। वहाँ तक आलू के उतरते ही मैंने उसे ठहर जाने का आदेश दिया। मुट्ठी भर परिमाण का आलू गाढ़े नमकीले पानी पर तैरता है। इसलिए आलू उस नमकीले पानी पर तिर गया। इसके बाद मंत्र पढ़ते मैंने गिलास के पानी को हिलाया तो सारा पानी एक हो गया, गाढ़ा नमकीला पानी पतला बन गया और आलू नीचे उतर गया।" सोमदेव ने समझाया।

सोमदेव की युक्ति पर हँसकर राजकुमारी ने उसकी ओर प्रेम भरी दृष्टि से देखा।

अच्छा सबक़

एक गाँव में मदन नामक एक नटखट लड़का था, जो पढ़ता न था, बल्कि गली-कूचों का हमेशा चक्कर लगाया करता था। वह एक दिन गली के बाजू में एक पेड़ के नीचे बैठा हुआ था, तभी सिर मुंडाये, चोटीवाला एक पंडित उस रास्ते से आ गुजरा।

नटखट मदन ने एक कंकड़ लेकर पंडित के सिर पर दे मारा। पंडित के सिर पर चोट आ गयी। पंडित ने सिर घुमाकर देखा तो हँसनेवाला मदन दिखाई पड़ा।

पंडित ने सोचा कि इस लड़के को अच्छा सबक़ सिखलाना है, इसलिए उसे निकट बुलाकर कहा–"वाह, तुम्हारा निशाना कैसा अचूक है!" यों कहते उसके हाथ में एक चवन्नी रखकर पंडित कहीं चला गया।

नटखट मदन पंडित के उद्देश्य को समझ नहीं पाया, बल्कि खुशी में फूला न समाया और फिर जाकर उसी पेड़ के नीचे जा बैठा। थोड़ी देर बाद उसी रास्ते से एक बुजुर्ग को गुजरते मदन ने देख लिया।

इस बार मदन ने एक बड़ा पत्थर लेकर उस बुजुर्ग के सिर पर दे मारा। बुजुर्ग झल्ला पड़ा और मदन को अपने निकट बुलाया। मदन खुशी के मारे दौड़ता आया और पैसों के वास्ते हाथ फैलाया। मगर बुजुर्ग ने उसके गालों पर ज़ोर से थप्पड़ मारे।

मदन की अक्ल ठिकाने लग गयी और उस दिन से फिर कभी उसने लोगों पर पत्थर नहीं फेंकें।

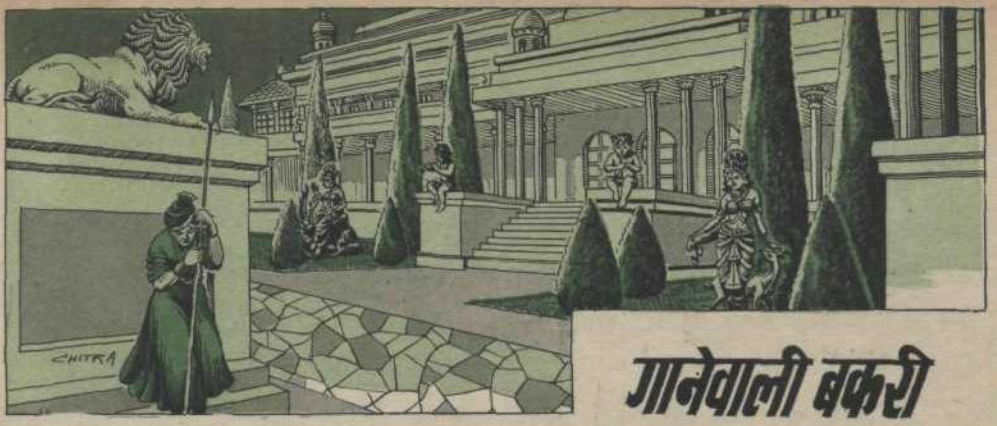

गानेवाली बकरी

पुराने जमाने की बात है। ब्रह्मदेश पर एक राजा राज्य करता था। वह संगीत का बड़ा प्रेमी था।

राजा ने स्फटिक शिलाओं से एक सुंदर महल बनवाया। उस रास्ते से चलनेवाले वहाँ पर ज़रूर रुक जाते, उस महल को देख प्रसन्न हो उसकी चिकनी दीवारों को हाथों से छू लेते। इसलिए राजा ने महल के सामने इसलिए रात-दिन पहरा बिठा दिया कि कोई अपने हाथों से महल की दीवारों को मैला न बनावे।

जाड़े के दिन थे। रात के समय एक सैनिक राज महल का पहरा दे रहा था। भयंकर सर्दी पड़ रही थी। उस वक़्त सैनिक ने अपने मन में सोचा कि जब सब लोग आराम से गरम कपड़े ओढ़कर सो रहे हैं, ऐसी हालत में उसे नौकरी बजाना बड़ा ही अन्याय है।

सैनिक ने अपने मन में सोचा–"मैं ही राजा होकर गरम कपड़ों के बीच लेट जाऊँ और राजा को इस सर्दी में पहरा देना पड़े तो कैसा होगा।"

अचानक उसके दिमाग में एक विचार आया। राजा को अपनी हालत का परिचय कराने के लिए एक ही उपाय है! उसने कोयले का एक टुकड़ा लेकर राज महल की दीवारों पर यों लिखा:

"यह दुनिया पैसेवालों की है!
दरिद्र की थाली खाली है!"

अपनी लिखावट को देख सैनिक बड़ी देर तक फूला न समाया। लेकिन वह यह बात बिलकुल भूल गया कि राजा ने उसे पहरे पर क्यों बिठाया है!

सवेरा होते ही राजकर्मचारियों ने आकर दीवारों की जाँच की। सैनिक की लिखावट देख उन लोगों ने राजा से

विजयानंद वर्मा

शिकायत की। राजा ने रात के पहरेदार को बुलाकर पूछा–"क्या तुमने ही दीवार पर कोयले से कुछ लिख दिया है?"

"जी हाँ, महाराज! मेरे मन में यह विश्वास पैदा हो गया कि इस दुनिया में धन से बढ़कर कोई सुख नहीं है। इसलिए मैंने वे ही बातें लिख दीं।" सिपाही ने हिम्मत के साथ जवाब दिया।

"तब तो तुम धन चाहते हो न?" राजा ने पूछा।

"जी हाँ, महाराज!" सिपाही ने जवाब दिया।

"अच्छी बात है। तुम जितना धन चाहते हो, दे देता हूँ। मैं देखूंगा कि तुम कैसे सुख भोगते हो?" राज ने कहा।

राजा के पास सैकड़ों एकड़ बगीचा था। उसके चारों तरफ़ चहर दीवारी थी। उस चहर दीवारी के नीचे एक अंधेरी कोठी बनवा कर राजा ने उसमें सोना व चांदी के ढेर लगवाये और सैनिक को उस कोठी में बन्दी बनाया।

राजकुमारी उस सैनिक की बुरी हालत देख रहम खा गयी और उसके बारे में चिंता करने लगी। उसकी दृष्टि में सैनिक अपराधी मालूम न हुआ। उल्टे वह सच्चे स्वभाव का और हिम्मतवर प्रतीत हुआ। उसकी मदद करने का राजकुमारी ने निश्चय कर लिया।

उस नगर में एक सुनार था। राजकुमारी ने उसके पास जाकर सारी

हालत बतायी और उसकी सलाह माँगी। उस रात को सुनार बगीचे की चहर दीवारी के पास गया, दीवार के नीचे एक पत्थर निकाला और अंधेरी कोठी में बंद सिपाही से पूछा कि उसे थोड़ा चांदी और सोना दे। सैनिक ने ऐसा ही किया। उस दिन से रोज़ सुनार उस छेद में से बन्दी को खाना पहुँचाता रहा।

राजकुमारी का प्रेम सैनिक पर दिन प्रति दिन बढ़ता गया। उसने निश्चय क़िया कि किसी न किसी तरह उसे जेलखाने से मुक्त कराना है। आख़िर उसने एक उपाय सोचा। उसने अंधेरी कोठी में से सारा सोना व चांदी सुनार को दिलवाया और उसके द्वारा एक चाँदी की बकरी तैयार करवायी, वह बकरी मधुर संगीत सुनाती थी। सुनार एक कुशल कारीगर था। उसने न केवल गानेवाली बकरी तैयार की बल्कि चहर दीवारी में से कुछ और पत्थर हटा कर बकरी को उस अंधेरी कोठी में पहुँचा दिया। सैनिक जब एकांत में घबराये बैठा रहता तब बकरी का संगीत उसका मनोरंजन करता था।

एक दिन राजा बगीचे में टहल रहा था, तब उसे कहीं से मधुर संगीत सुनाई दिया। मगर उसे इस बात का पता न चला कि वह संगीत कहाँ से आ रहा है।

दूसरे दिन राजाकुमारी और मंत्री को साथ ले बगीचे में टहलने निकाला। उसे

फिर संगीत सुनायी दिया। उसका पता लगाने के लिए राजा ने अंधेरी कोठी को खुदवा कर उसे तुड़वा दिया। राजा यह भी भूल गया था कि उसने वह कोठी किसलिए बनवायी है। उस कोठी में उस वक़्त सिवाय एक चांदी की बकरी के कुछ न था और उसीमें से संगीत की मधुर ध्वनि निकल रही थी।

राजा उस बकरी को अपने महल में ले गया। उसे खोल कर उसमें रहनेवाले संगीत के यंत्र को देखना चाहा। मगर कोई भी उसे खोल नहीं पाया। आखिर उस बकरी को तैयार करनेवाले सुनार ने ही आकर बकरी के ताले को खोला। बकरी के भीतर एक युवक लेटा हुआ दिखाई दिया। राजा ने चकित हो उस सैनिक से पूछा–"तुम कौन हो?"

"महाराज, मैंने दीवार पर लिखा था कि धन ही दुनिया पर शासन करता है, इस अपराध में आपने मुझे अंधेरी कोठी में बंद किया था। लेकिन अब मैं समझ गया कि दुनिया पर धन शासन नहीं करता।" सैनिक ने कहा।

राजा ने सैनिक के कंधे पर थपथपा कर पूछा–"तब तो कौन चीज़ शासन करती है?"

"ज़िंदगी में दूसरी मुख्य चीज़ है कि ज़रूरत के समय मित्र की सहायता करना।" सैनिक ने उत्तर दिया।

"दूसरी चीज़ तुमने बतायी, आखिर पहली चीज़ क्या है?" राजा ने पूछा।

"इस दुनियाँ में एक मर्द के लिए सबसे बड़ी आवश्यक चीज़ औरत का प्यार है।" सैनिक ने कहा।

ये बातें सुनने पर राजकुमारी का चेहरा लज्जा के मारे लाल हो उठा।

राजा की समझ में आया कि बात क्या है? उसी क्षण राजा ने अपनी पुत्री का विवाह सैनिक के साथ करने का निश्चय किया। उनका विवाह वैभव के साथ संपन्न हुआ। विवाह के लिए बाजे की ज़रूरत नहीं पड़ी, चांदी की बकरी ने ही संगीत का आयोजन किया।

लोभ की दवा

रामापुर में कृष्णदास नामक एक ब्याज का व्यापारी था। उसने गाँव के लोगों को उधार देकर अनेक लोगों को गरीब बनाया और अपार संपत्ति जोड़ ली। इसके साथ वह गाँववालों की बिरादरी से दूर हो गया और उसका व्यापार भी मंद पड़ गया।

कृष्णदास ने जो संपत्ति जोड़ी, वह उसकी तीन पीढ़ियों तक बैठे-बैठे खायी जा सकती थी। लेकिन कृष्णदास की चिंता यह थी कि चौथी पीढ़ी का क्या होगा? यह चिंता मानसिक बीमारी बनकर उसके शरीर को खाये जाने लगी। अनेक वैद्यों ने उसका इलाज़ किया, मगर उसकी बीमारी दूर नहीं हुई। इस पर उसके एक रिश्तेदार ने कृष्णदास को समझाया–"कृष्णदास, तुमने अपनी ज़िंदगी भर दूसरों से धन वसूल किया, लेकिन किसी को भी कुछ नहीं दिया। तुम्हारे गाँव के सब लोग गरीब ही हैं। तुम रोज़ एक गरीब को दान देते जाओ तो तुम्हारी बीमारी दूर हो जायगी।"

इस सुझाव पर कृष्णदास का विश्वास जम गया। उसने अपने पड़ोसी गरीब रामदास को बुलाकर कहा–"रामदास, मैं गरीबों में दान बांटना चाहता हूँ और उन्हें खाना खिलाना चाहता हूँ। आज मैं तुम्हारे घर के सब लोगों को खाना खिलाऊँगा।"

"महाशय, आज हमारे लिए दोनों जून का खाना है। कल की बात कल देखी जा सकती है। आप ऐसे लोगों को बुलाकर खाना खिलाइये, जिन्हें आज खाने को नहीं है।" यों कहकर रामदास चला गया।

यह बात सुनकर कृष्णदास चकित रह गया। रामदास जैसा गरीब जब कल के बारे में चिंता नहीं करता तो उसे चौथी पीढ़ी के बारे में क्यों चिंता करनी है?

उस दिन से कृष्णदास रोज़ गरीबों को खाना खिलाते अपना धन ख़र्च करने लगा। उसकी बीमारी अपने आप जाती रही।

विचित्र परीक्षा

एक राजा के दो रानियाँ थीं। दोनों के एक एक पुत्र थे। कुछ समय बाद बड़ी रानी का देहांत हो गया। राजकुमार एक के बाद एक युक्त वयस्क हुए। छोटी रानी ने भांप लिया कि राजा बड़ी रानी के पुत्र को युवराजा बनाना चाहता है, इसलिए उसका पिंड छुड़ा कर अपने पुत्र को राज-गद्दी दिलाने के ख्याल से छोटी रानी ने राजा से कहा–"बड़े राजकुमार को रत्नगिरि की राजकुमारी के साथ विवाह करने के लिए भेज दीजिये।"

रत्नगिरि की राजकुमारी के साथ विवाह करने जाकर आज तक कोई राजकुमार प्राणों के साथ वापस न लौटा था, फिर भी राजा छोटी रानी की इच्छा को पूरा करने को तैयार हो गया।

बड़ा राजकुमार भी रत्नगिरि की राजकुमारी के बारे में सुन चुका था। वह यह भी जानता था कि रत्नगिरि की राजकुमारी के साथ विवाह करने में ख़तरा भी है, फिर भी वह साहसी था। इसलिए पिता का आदेश मिलते ही बड़ा राजकुमार रत्नगिरि के लिए चल पड़ा।

रत्नगिरि के राज्य में प्रवेश करके राजकुमार एक सराय में ठहरा और राजकुमारी के बारे में दरियाफ़्त किया। उसे मालूम हुआ कि राजकुमारी के साथ विवाह करने आनेवाले को वह कोई पेय पदार्थ देती है, उसे पीने पर वह एक शिला बन जाता है, शिला बनने पर उसे किसी सुरंग में डलवा देती है।

जब लोगों को मालूम हुआ कि यह राजकुमार राजकुमारी के साथ विवाह करने आया है, तब लोगों ने उसे समझाया–"बेटा, अकारण तुम क्यों शिला बन जाना

जानकी प्रसाद

चाहते हो? किसी दूसरी युवती के साथ विवाह करके सौ साल जिओ।"

मगर राजकुमार को यह सलाह अच्छी न लगी। सब लोग राजकुमारी के बारे में जो दंत कथाएँ सुना रहे थे, वे सब उसे अस्वाभाविक मालूम हुईं। राजकुमारी जो पेय पदार्थ देती है, उसे लोग क्यों पीते हैं? यदि राजकुमारी का उद्देश्य सभी राजकुमारों को शिलाएँ बनाना ही है तो, वह कठिन काम उन्हें क्यों सौंपती है? ऐसे संदेह राजकुमार के मन में उठे, लेकिन इनका समाधान कोई न कर पाया। राजकुमार अपने संदेहों का समाधान जाने बिना अपने राज्य को लौटना नहीं चाहता था। यह निश्चय करके राजकुमार सीधे राजमहल में गया और पूछा–"राजकुमारी, मैं तुम्हारे साथ विवाह करने के विचार से आया हूँ!"

"मुझ से विवाह करना चाहते हैं तो आपको एक राक्षस का सिर काटकर लाना होगा। मैं उस राक्षस के संबंध में पूरा परिचय देती हूँ। सावधानी से सुनिये। सात समुद्रों के उस पार एक नीला पहाड़ है। उस पहाड़ की एक गुफा से धुआँ निकलता होगा। उस धुएँ में से होकर भीतर जायेंगे तो आपको एक राक्षस दिखाई देगा। उसका सिर काटकर आपको लाना होगा। उसके सोते समय राक्षस का सिर काटा जा सकता है, मगर उसके प्राण एक तोते में हैं। वह तोता वहाँ से पूर्वी दिशा

में एक लाल पहाड़ पर, एक पेड़ के खोखले में रहता है। उस तोते को पकड़कर उसकी गर्दन काट देंगे तो राक्षस मर जाता है। तब राक्षस का सिर काटकर आपको लाना होगा।" राजकुमारी ने समझाया।

"मैं ज़रूर लाऊँगा।" राकुमार ने निड़रता के साथ जवाब दिया।

"तब तो मैं आपको एक पेय पदार्थ देती हूँ। मैंने जो काम आपको सौंपा है, वह कार्य करने की शक्ति आप में है, इस पेय का आप पर कोई असर न पड़ेगा। ऐसी शक्ति आप में न हो तो शिला बन जायेंगे। यदि यह पेय पीने से इनकार करेंगे तो आपको सुरंगवाले भवन में बंदी बनाया जायगा।" राजकुमारी ने जवाब दिया।

राजकुमार ने पेय पदार्थ पीने की सम्मति प्रगट की। राजकुमारी ने पेय पदार्थ ला दिया। राजकुमार ने उसे पी लिया, पर वह पत्थर न बना।

"मैं पत्थर न बना हूँ, इसका मतलब है कि मैं अपने कार्य में सफल हो जाऊँगा। अभी चल देता हूँ।" राजकुमार ये शब्द कहते उठ खड़ा हुआ।

"आपको कहीं जाने की ज़रूरत नहीं। आपकी परीक्षा हो गयी। सात समुद्रों के उस पार राक्षस, तोता आदि की बातें मेरी कल्पित हैं। मेरा उद्देश्य केवल मेरे कही हुई बातें सुनकर यह कार्य करने को जो वीर तैयार हो जाते हैं, उनके साथ विवाह करने का है। मैंने जो पेय पदार्थ दिया, उसे आज तक किसी ने नहीं पिया। वे सब मेरे सुरंगवाले महल में बन्दी हैं।" राजकुमारी ने समझाया।

इसके बाद वैभव के साथ राजकुमार का विवाह रत्नगिरि की राजकुमारी के साथ संपन्न हुआ। इसके पहले राजकुमारी के साथ विवाह करने की इच्छा को लेकर आयें हुए सभी राजकुमार बंधनों से मुक्त हुए। अपनी पत्नी के साथ लौटे हुए सौतेले पुत्र को देख छोटी रानी निराश हो गयी। राजा ने अपनी बड़ी रानी के पुत्र का राज्याभिषेक किया।

पढ़ाई की गोलियाँ

प्राचीन काल की बात है। एक गाँव में एक पंडित रहता था। उसने अपने बचपन में थोड़ी-सी शिक्षा पायी थी, मगर अपने को बड़ा पंडित बतलाने के लिए उसके पास अनेक पोथियाँ थीं। उन में से अधिकांश पुस्तकें अटारी पर पड़ी रहती थीं, पाँच-छे पुस्तकें ही वह विद्यार्थियों को पढ़ाता था। उन पुस्तकों का सार पंडित नहीं जानता था।

फिर भी लोगों का यह भ्रम था कि वह एक बहुत बड़ा पंडित और गुरु है। इस प्रकार भ्रम में डालनेवाली बातें बताना पंडित खूब जानता था। इस कारण बहुत से विद्यार्थी उसके यहाँ अध्ययन करते उसे धन सौंप देते थे।

एक बार पंडित के पास रामानंद नामक एक लड़का पढ़ने आया। वह बड़ा तेज़ बुद्धिवाला था। रामानंद को यह समझते देर न लगी कि पंडित ने जो कुछ बचपन में सीखा, उसी को विद्यार्थियों से कंठस्थ करना जानता है, इससे कुछ अधिक नहीं। पंडित यह भी नहीं जानता कि विद्यार्थियों से जो पुस्तकें कंठस्थ कराता है, उन पुस्तकों में क्या लिखा हुआ है। रामानंद होशियार था, इसलिए उसने उन पुस्तकों का सार अपने आप ग्रहण कर लिया। इसलिए उसमें विद्या की प्यास बढ़ती गयी। इस प्यास को बुझाने के लिए वह काशी जाकर बड़े पंडितों के पास अध्ययन करना चाहता था, लेकिन उसके पास धन न था।

कम से कम गुरुजी की अटारी पर पड़ी हुई पोथियों को ही सही, उसे पढ़ने देते तो थोड़ा-बहुत वह ज्ञान बढ़ा सकता था। मगर पंडित उन ग्रन्थों को किसी के हाथ देता न था। दीमक भी लग जाय तो भी उसे कोई चिंता न थी। फिर भी

विमला गर्ग

गुप्त रूप से रामानंद ने जैसे तैसे थोड़ी क़िताबें पढ़ डालीं, इस कारण शिक्षा की प्यास उसमें बढ़ती गयी ।

रामानंद अपनी यह समस्या हल करने के लिए बड़ा व्याकुल था, पर पंडितजी एक और समस्या के कारण परेशान था । वह यह कि पंडित समझ गया, रामानंद उससे भी अधिक ज्ञान प्राप्त करता जा रहा है । यों तो वह सब लड़कों की भांति पंडित की बतायी हुई बातें याद करता जा रहा है, मगर वह ऐसी बातें भी याद करता जा रहा है जो अन्य विद्यार्थी तथा पंडित भी स्वयं नहीं समझ पाते हैं ।

यह देख पंडित बड़ा परेशान रहने लगा । इसमें कोई रहस्य ज़रूर होगा । इसका पता लगाने के लिए पंडित ने अन्य विद्यार्थियों को गुप्त रूप से आदेश दिया कि रामानंद अकेले कहाँ-कहाँ जाता है और क्या करता है? विद्यार्थियों ने ऐसा ही किया ।

छुट्टी के समय रामानंद निकट के जंगल में जाता और अपने पाठ याद करते पेड़ों के नीचे टहलता । दुपहर के समय किसी पेड़ के नीचे बैठकर ज्वार की रोटी खाता, दूर से देखकर शिष्यों ने जाकर पंडित से बताया कि रामानंद जंगल में टहलते कोई मंत्र पढ़ता है और दुपहर के वक़्त कोई गोलियाँ खा लेता है ।

मूर्ख पंडित ने मन में सोचा–"इसीलिए वह तेज़ बुद्धिवाला बन गया है । उसके रहस्य का पता मैं लगा लूँगा ।"

अंधेरे के फैलते-फैलते रामानंद घर लौट आया। पंडितजी ने उसे एक कंभे से बाँधकर कहा–"मैं तुम्हारे रहस्य को जान गया हूँ। तुम कोई मंत्र जानते हो। तुम्हारे पास दवा की कोई गोलियाँ हैं। उनकी मदद से तुम मेरी पढ़ाई से भी ज्यादा ज्ञान प्राप्त करते हो। उन मंत्रों का रहस्य मुझे बताकर दवा की गोलियाँ मुझे दे दोगे तो मैं और अच्छी तरह से विद्यार्थियों को पढ़ाकर लोगों का उपकार कर सकता हूँ!"

गुरु की बातें सुनकर रामानंद घबरा गया। उसने सच्ची बात बतायी कि वह मंत्र-तंत्र कुछ नहीं जानता और न उसके पास दवा की गोलियाँ ही हैं।

मगर पंडित का क्रोध भड़क उठा, उसने गरजकर कहा–"तुम झूठ बोलते हो! क्या तुम सोचते हो कि जंगल में टहलते हुए तुम्हारे मंत्र पढ़ना और दुपहर के समय तालाब के किनारे पढ़ाई की गोलियों का निगलना मैं नहीं जानता हूँ? ये रहस्य अगर तुम न बताओगे तो तुम्हारा सिर कटवा दूंगा।"

रामानंद को अब स्पष्ट मालूम हो गया कि पंडित उसकी कल्पना से भी ज्यादा महा मूर्ख है। तब पंडित को धोखा देकर अपनी पढ़ाई की भूख मिटाने के लिए उसे एक अच्छा उपाय सूझा। उसने पंडित से कहा–"गुरुजी, आप ने मेरे रहस्य को बड़ी होशियारी से जान लिया

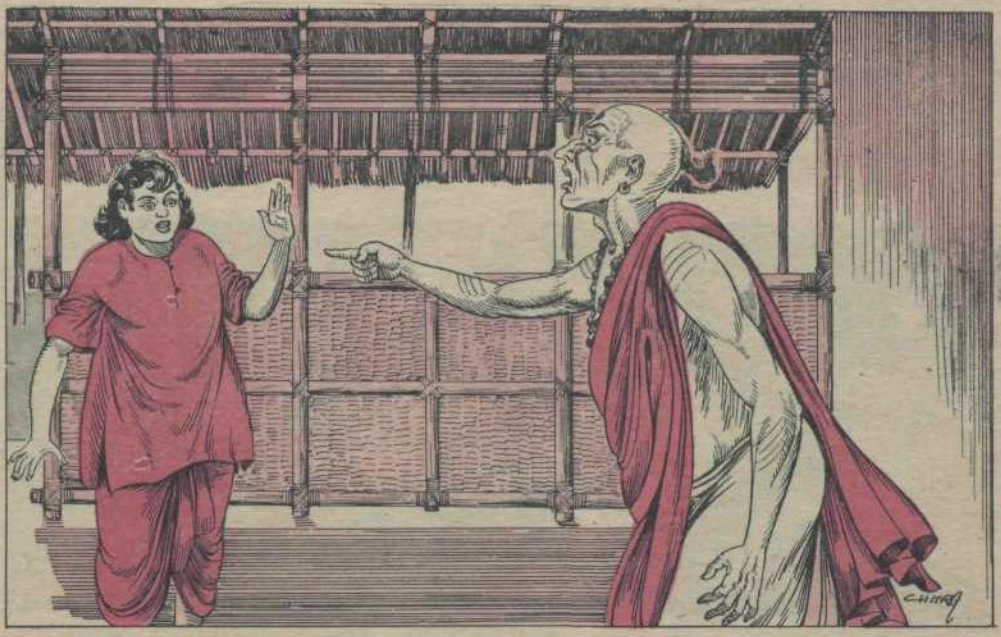

है। मैं अब क्यों छिपाऊँ? यह बात सच है कि मैं मंत्र जानता हूँ। मगर वे मंत्र पढ़ाई की गोलियाँ तैयार करने में ही काम देते हैं। उन्हें मुझे किसी से कहना मना है। यदि कह देता हूँ तो मैं मर जाऊँगा। मगर मैं पढ़ाई की गोलियाँ तैयार करके किसी को दे सकता हूँ। मेरे पास जो गोलियाँ थीं, वे समाप्त हो चुकी हैं। मुझे अब नयी गोलियाँ तैयार करनी हैं।"

"तुम जल्द तैयार कर दो।" गुरू ने कहा।

गोलियाँ तैयार करने में कम से कम एक सप्ताह लगता है। चार तोले सोने को तीन दिन तक आग में तपाते मंत्र पढ़ना होगा। इसके बाद हम जो जो ग्रन्थ पढ़ना चाहते हैं, उन्हें भस्म करके उस भस्म को सोने के साथ मिलाकर गोलियाँ बनानी होंगी। उन गोलियों को निगल जाने से उन ग्रन्थों का सार हमारे दिमाग में पूरा उतर आता है।" रामानंद ने समझाया।

"अरे, यह कौन बड़ी बात है? चार तोले सोना मैं तुम्हें दे देता हूँ। अटारी पर बड़ी बड़ी पोथियाँ पड़ी हुई हैं। उन्हें काम में लाकर पढ़ाई की गोलियाँ बनाओ।" पंडित ने बताया।

रामानंद सारी पोथियाँ उठाकर चार तोले सोने के साथ जंगल में पहुँचा। गुरुजी और उसके अन्य शिष्य भी उसके साथ जंगल में पहुँचे। उनकी मदद से रामानंद ने सबके देखते सोने को एक गड्ढे में गाड़ दिया, उसने बताया कि सोने के तपने तक वहीं रहकर बिना सोये व खाये-पिये मंत्र पढ़ते यह देखना होगा कि आग बुझ न जाय। बाक़ी लोग संध्या तक जंगल में रहे और अंधेरे के फैलते ही वहाँ से चले गये।

उन सबके जाते ही रामानंद ने आग बुझायी, सोना लेकर पोथियों का बंडल सिर पर उठाया और काशी की ओर चल पड़ा।

गुरु की भूल

एक गाँव में एक ज़मींदार था। उसके एक ही लड़का था। जमीन्दार ने अपने गाँव के सिद्धाचार्य नामक गुरु के पास अपने लड़के को पढ़ने भेजा। लड़का जब बारह साल का हुआ, तब तक उसकी पढ़ाई समाप्त हो गयी। ज़मींदार ने गुरु को अच्छे उपहार व भेंट देकर उसका सत्कार किया।

सिद्धाचार्य लोभी था। उसने ज़मींदार के लड़के से गुप्त रूप में कहा–"तुम्हारे पिता ने मेरा अच्छा सत्कार किया। मगर तुम्हारे पास अपनी जो निजी संपत्ति है, वह न दो तो तुम्हारी पढ़ाई सफल न होगी। यह बात किसी पर तुम्हें प्रकट नहीं करनी है। बताओ, तुम्हारे पास कितना धन है?"

लड़के ने बताया, उसे जन्मगाँठ के समय जो पैसे दिये हैं और रिश्तेदारों ने जो कुछ दिया, वह सब-कुछ मिलकर अच्छी खासी रक़म है।

"रात के दूसरे पहर में तुम उस धन को लेकर काली माता के मंदिर में चले आओ; मैं वहाँ पर तुम्हारा इंतज़ार करता रहूँगा।" सिद्धाचार्य ने कहा।

ज़मीन्दार के लड़के ने ऐसा करने को मान लिया।

गाँव से थोड़ी दूर हटकर एक बगीचे में काली माता का मंदिर था। रात के दूसरे पहर में सिद्धाचार्य वहाँ पहुँचा। मण्डप की सीढ़ियों पर जा बैठा।

इसके पहले ही एक व्यक्ति मण्डप में आया। दुपट्टा ओढ़े कंभे से सटकर सो रहा था। सिद्धाचार्य ने उसे नहीं देखा।

वह सोनेवाला व्यक्ति पड़ोसी गाँव का एक किसान था। उसी दिन सवेरे वह एक झाबे में आम लेकर जमींदार के गाँव

विमला देशाय

में बेचने आया था। गाँव में पहुँचते ही एक ज्योतिषी ने उसके हाथ की रेखाएँ देख बताया–"तुम साहस करोगे तो तुम्हारा लाभ होगा।"

किसान ने ज्योतिषी के हाथ में एक चवन्नी रख दी और बड़े उत्साह के साथ गाते आगे बढ़ा।

सवेरे शाल ओढ़कर टहलने जाने की ज़मींदार की आदत थी। उसने दूर से ज्योतिषी और किसान को देखा। किसान के निकट आने पर ज़मींदार ने पूछा–"तुम बहुत ही खुश नज़र आते हो, बात क्या है?"

"ज्योतिषी ने आज बड़ी अच्छी बात कही। कहता है कि साहस करने पर मेरा लाभ होगा। साहस की बात भगवान जाने, मेरे आम अच्छे दाम बिक जाय तो वही लाभ मेरे लिए पर्याप्त है।" किसान ने जवाब दिया। किसान ने ज़मीन्दार को नहीं पहचाना। वह शाल ओढ़े हुए था।

जमीन्दार को लगा कि देखे कि ज्योतिषी की बात कैसे सच्ची निकलती है! किसान के आगे बढ़ने पर ज़मीन्दार ने अपने पीछे चलनेवाले नौकर से कुछ कहा। तुरंत नौकर ने किसान को रोककर पूछा–"तुम इस गाँव में फल बेचने आये, ज़मीन्दार को भेंट दिये बिना फल बेचते हो?" यों कहकर ज़बर्दस्ती वह आम का झाबा लिये चला गया।

फलवाले को बड़ा दुख हुआ। लाभ की बात भगवान जाने, सारे के सारे फल हाथ से निकल गये। बलवानों पर साहस कैसे करे? ज्योतिषी ने झूठ कहा है। किसान को खाली हाथ अपने गाँव लौटने की इच्छा न हुई। पागल की तरह वह सारे गाँव घूमता रहा। ज्योंतिषी की खोज़ की। मगर वह दिखाई नहीं दिया। दिन भर घूमता रहा, रात के होते ही काली माता के मंदिर में गया। मण्डप के खंभे से सटकर वैसे ही सो गया।

सब लोगों के सो जाने के बाद ज़मीन्दार का लड़का अपना सारा धन लेकर काली

मंदिर में आया। सिद्धाचार्य ने लड़के को देखते ही पूछा–"बेटा, आ गये? कितने रुपये लाये हो?"

"सौ रुपयों में पाँच-दस कम हैं।" ज़मीन्दार के लड़के ने जवाब दिया।

"अच्छी बात है, तुम रुपयों की पोटली मेरे हाथ देकर जल्दी घर लौट जाओ।" सिद्धाचार्य ने समझाया।

ये बातें सुन किसान जाग पड़ा। उसने गुरु और शिष्य की सारी बातचीत सुन ली थी। वह पहले से ही नाराज़ था। सिद्धाचार्य के हाथ में रुपयों की पोटली देख वह चिल्ला उठा–"अबे, रुपये वहाँ रख दो। चोरी करते हो?"

सिद्धाचार्य घबरा गया और रुपयों की पोटली वहीं पर छोड़ भाग खड़ा हुआ।

किसान रुपयों की पोटली लेने के बाद चिंता में पड़ गया। ज्योतिषी की बात तो सच निकली। उसने साहस किया है। उसे रुपयों की पोटली हाथ लगी है। मगर उसे लेकर अपने गाँव जाने की हिम्मत किसान को न हुई। वह चोरी का माल लगता था। उसे अपने पास रखना खतरे से खाली न था। इस धन को ज़मीन्दार के हाथ देकर अपने फल वापस लेना ही उचित होगा। यह सोचकर सवेरा होते ही किसान ज़मीन्दार के घर गया। उधर ज़मीन्दार के नौकर दिन भर किसान और ज्योतिषी पर निगरानी रखे हुए थे। आधी रात के समय ही नौकरों ने ज़मीन्दार के घर जाकर बताया कि उसके पुत्र ने रुपये ले जाकर अपने गुरु के हाथ दिये हैं।

किसान के ज़मीन्दार के घर पहुँचने के थोड़ी देर बाद ज़मीन्दार के नौकर ज्योतिषी और सिद्धाचार्य को भी वहाँ पकड़ लाये। ज़मीन्दार ने सिद्धाचार्य से पूछा–"मैंने तुम्हें जो पुरस्कार दिया, वह पर्याप्त न हो तो मुझ से पूछ लेते? छोटे लड़कों के साथ कहीं ऐसे काम कराये जाते हैं?" यों डाँटकर किसान को फलों का दाम और पुरस्कार दिया, साथ ही ज्योतिषी को भी पुरस्कार देकर विदा किया।

अनोखा चोर

सैकड़ों साल पहले की बात है। विदिशा नगर की प्रजा धर्म मार्ग पर चलती थी। राजा के शासन-कार्य भी प्रजा के लिए लाभदायक थे। कहीं कोई चोरी तक न होती थी।

पड़ोसी देश से एक बार रामगुप्त नामक एक व्यक्ति अपनी सारी संपत्ति साथ ले विदिशा नगर में आ बसा। वहाँ पर एक घर बनाया और अनाज का व्यापार करने लगा। व्यापार में उसे खूब नफ़ा हुआ। इस तरह एक साल बीत गया। तब रामगुप्त ने एक उत्सव मानाया। अपने सभी ग्राहकों को निमंत्रण देकर उन्हें बढ़िया भोज दिया।

भोजन के बाद ग्राहक विश्राम करके अपने घर लौटते समय उस व्यापारी के यहाँ से आवश्यक माल खरीद कर चले गये। किंतु लौटते समय उन्हें शैतानी सूझी! एक ने एक सेर चावल खरीदकर पैसे दिये और रामगुप्त की आँख बचाकर एक सेर चावल और ले लिया। इसी प्रकार एक ने सेर भर चने खरीदे, उसके पैसे देते हुए चोरी से एक सेर और चने अपनी थैली में डाल लिये। एक मेहमान सब की आँख बचाकर पिछवाड़े में बंधी गाय को ही हाँक ले गया। बाक़ी मेहमान भी जो चीज़ हाथ में आयी, लेते गये।

रामगुप्त ने एक भी चोरी को नहीं देखा, मगर उसकी पत्नी ने घर की सफ़ाई कराते हुए कहा–"अजी, पेटी से निकाली गयी हमारी सोने की थाली दिखाई नहीं देती।"

थोड़ी देर बाद नौकरों द्वारा मालूम हुआ कि पिछवाड़े में से गाय भी गायब हो गयी है।

क्रांति चौधरी

रामगुप्त ने निश्चय कर लिया कि इन दोनों चोरियों के बारे में सवेरा होते ही राजा से फ़रियाद करनी है।

मगर दूसरे दिन सवेरे वे सब लोग अचानक रामगुप्त के घर आये, जिन लोगों ने पिछले दिन उसके घर आतिथ्य पाया था, उन लोगों ने वे सब चीज़ें रामगुप्त को लौटा दीं, जिन चीज़ों की उन्होंने चोरी की थी। चावल, चने इत्यादि की जिन लोगों ने चोरी की थी, उन लोगों ने उन चीज़ों का मूल्य चुकाया। जो गाय को चुरा ले गया था, उसने गाय लौटा दी। सब ने रामगुप्त से अपनी-अपनी चोरी के लिए क्षमा माँग ली।

इसे देख रामगुप्त उन पर प्रसन्न नहीं हुआ, बल्कि नाराज़ हो गया। उसने जिन चीज़ों की कल्पना नहीं की थीं, वे चीज़ें भी वापस मिल गयीं, मगर सोने की थाली वापस न मिली।

"तुम सब लोग अव्वल दर्जे के चोर हो! तुम्हारे क्षमा माँगने पर मैं विश्वास नहीं कर सकता। बेकार की चीज़ों को वापस लौटाकर पाँच हज़ार क़ीमतवाली सोने की थाली को तुम लोगों ने दबा लिया। तुम सब उसे बांट लेना चाहते हो! जब तक तुम लोग मेरी सोने की थाली को न लौटाओगे, तब तक मैं तुम लोगों को नहीं छोड़ूंगा। यहाँ से कोई अपने घर भी नहीं जा सकते।" रामगुप्त ने धमकी दी।

सब ग्राहकों ने एक स्वर में बताया कि हम लोग सोने की थाली की बाबत कुछ नहीं जानते।

"तब तो राजदरबार में चलो।" यों कहते रामगुप्त सबको राजदरबार में ले गया।

इस बीच एक और चोरी का पता लग गया।

रामगुप्त के घर से सोने की थाली को चुरानेवाला उसके घर का नौकर रंगनाथ था। जब वह रामगुप्त के घर नौकरी में

लगा, तब से वह मौक़ा मिलने पर कोई न कोई छोटी चीज़ उठा ले जाता था। मगर पिछले दिन भोज की गड़बड़ में उसे सोने की थाली हाथ लगी। उसी को वह उठा ले गया था।

दूसरे दिन सवेरे रंगनाथ सोने की थाली बेचने एक जौहरी की दूकान में गया। उस वक़्त पड़ोसी देश का एक बुज़ुर्ग दूकानदार से बात कर रहा था। उस बुज़ुर्ग ने सोने की थाली को देखते ही उसे पहचान लिया और दूकानदार से कहा–"यह मेरी थाली है। बहुत दिन पहले किसी ने मेरी सोने की चीज़ों की पेटी चुरा ली है। उस पेटी में यह थाली भी थी। इससे पूछिये कि यह इसके हाथ कैसे लगी?"

तुरंत जौहरी उस बुज़ुर्ग को तथा रंगनाथ को राजदरबार में ले गया। राजा के सामने रंगनाथ ने बताया कि उसने रामगुप्त के घर से उस थाली की चोरी की है।

राजा ने रामगुप्त को दरबार में बुलाकर सिपाहियों के द्वारा उसके घर की तलाशी ली। बुज़ुर्ग ने सोने की चीज़ों की जो पेटी खोयी थी, वह रामगुप्त के घर मिल गयी।

बात यों हुई थी, सब लोगों में चोरी करने की भावना का मूल कारण रामगुप्त ही था। उसने अपने देश में चोर के रूप में अपनी ज़िंदगी बितायी थी। वहाँ पर ख़तरे की आशंका करके वह चोरी के माल के साथ विदिशा नगर में पहुँचा और वहाँ पर उसने व्यापार शुरू किया। उसका खाना खाने के कारण उसके अतिथियों में भी तत्काल चोरी करने की भावना पैदा हो गयी। मगर दूसरे ही दिन वे लोग पछताने लगे। परंतु रोज़ रामगुप्त के घर खाना खानेवाला नौकर रंगनाथ पक्का चोर बन गया था।

राजा ने पड़ोसी देश के बुज़ुर्ग को उसकी पेटी दिलाकर रामगुप्त और रंगनाथ को कठोर दण्ड दे दिया।

महाभारत

पांडवों की सेनाएं कुरुक्षेत्र में प्रवेश करते ही सैनिक शिविरों का निर्माण करने के लिए अनुकूल प्रदेश को ढूंढा गया। वहाँ पर घास, लकड़ी और पानी का अच्छा प्रबंध था। उसके समीप में कहीं श्मशान, मंदिर तथा ऋषियों के आश्रम न थे। कृष्ण और अर्जुन ने अनेक राजाओं को साथ ले रथ पर शिविर-निर्माण का सारा प्रदेश घूमकर देखा। जहाँ-तहाँ दलों में इकट्ठे हुए कौरव सैनिकों को दूर भगा दिया।

धृष्टद्युम्न, सात्यकी तथा युयुधान ने शिविरों के निर्माण के हेतु माप कराये। हिरण्वती नदी के तट पर पांडवों के शिविर निर्मित हुए। उनके चारों तरफ़ कृष्ण ने बड़ा कंदक खुदवाया। पांडवों के शिविर जैसे अनेक शिविर अन्य राजाओं के लिए भी बनाये गये। सभी शिविरों में भोजन तथा पीने के सारे प्रबंध किये गये। सेना के साथ कई हज़ार शिल्पी और वैद्य भी थे। कवच, आयुध, शहद, घी, धूप इत्यादि के पहाड़ों जैसे ढेर लगाये गये। युधिष्ठिर ने हर एक शिविर में जाकर इस बात की जाँच की कि सारे इंतज़ाम ठीक से किये गये हैं या नहीं। पांडवों के द्वारा निर्मित शिविरों का समाचार सुनकर उनके मित्र राजा अपने दल-बल के साथ आ पहुँचे।

उधर कृष्ण के हस्तिनापुर से निकलते ही दुर्योधन ने कर्ण, शकुनि तथा दुश्शासन को बुलाकर कहा–"कृष्ण तो यही चाहते

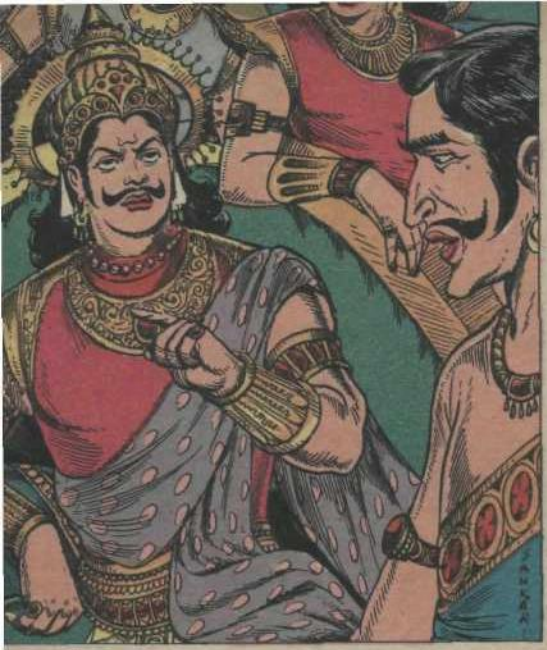

हैं कि मेरे तथा पांडवों के बीच युद्ध हो! वे पांडवों को मेरे विरुद्ध उकसायेंगे। हमें भारी पैमाने पर युद्ध की तैयारियाँ करनी होंगी। इसलिए तुम लोग बड़ी सतर्कता के साथ युद्ध की तैयारियाँ करके कुरुक्षेत्र में शिविरों का निर्माण कराओ। हमें खाद्य पदार्थ जिन मार्गों के द्वारा प्राप्त होते हैं, वे मार्ग शत्रु के अधीन में न आवे, इसके लिए आवश्यक जबर्दस्त पहरा बिठाना होगा। शिविरों में आवश्यक सामग्री के साथ आयुध भी पूर्ण रूप से उपलब्ध हों। लाखों की संख्या में पताकाएँ और ध्वजाएँ तैयार करवा दो। शिविरों के बीच के मार्ग समतल बनवा दो। कल ही सेना यहाँ से रवाना हो शिविरों में पहुँच जायें।"

कौरवों के शिविर भी तैयार हो गये। हस्तिनापुर सैनिकों के कोलाहल से भर उठा। कौरवों की सेनाएँ शिविरों में पहुँचीं।

आखिर कौरवों को मारने के लिए सारे प्रयत्न हो चुकने के उपरांत युधिष्ठिर चिंता मे पड़ गया। उसने कृष्ण से कहा– "हे कृष्ण! हम जो प्रशत्न करने जा रहे हैं, वे धर्म के विरुद्ध नहीं हैं?"

इस पर कृष्ण ने उत्तर दिया–"हमें राज्य का हिस्सा न दे तो हम कौरवों के साथ समझौता नहीं कर सकते। ऐसी हालत में युद्ध अनिवार्य हो जाता है।"

कृष्ण के मुँह से ये बातें सुनने के उपरांत युधिष्ठिर ने युद्ध की घोषणा की। इससे सेनाओं के बीच उत्साह पैदा हो गया।

इसके बाद युधिष्ठिर ने भीम एवं अर्जुन से कहा–"हमने अपने वंश का नाश होने से रोकने के लिए वनवास और अज्ञातवास भी किये, असंख्य यातनाएँ भी झेलीं। परंतु वंश का विनाश अब निकट आ गया है। वंश की रक्षा के लिए हमने जो प्रयत्न किये, वे सफल न हुए। परंतु वंश के विनाश के लिए हम जो प्रयत्न करने जा रहे हैं, वे सफल होने जा रहे हैं, यह बात निश्चित है। मेरी समझ

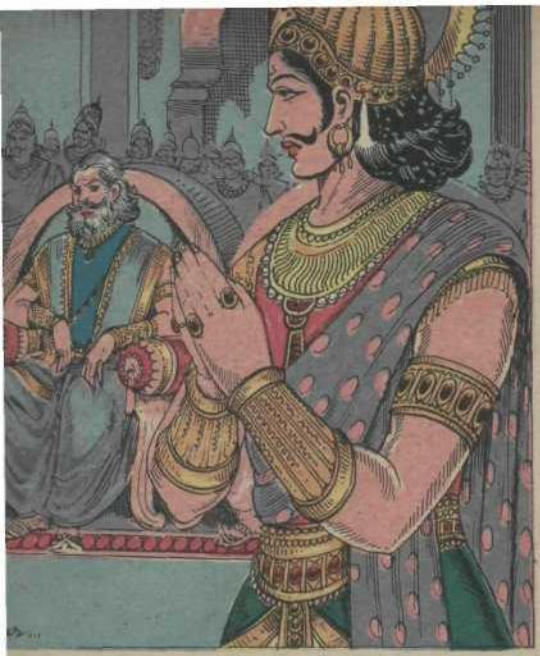

में नहीं आता कि हम अपने गुरु जनों तथा वृद्धों का वध करके कैसी विजय प्राप्त करनेवाले हैं?"

"हमारी माता तथा विदुर ने हमें जो हित की बातें बतायीं, उनसे बढ़कर दूसरा कौन धर्म है! अतः युद्ध अनिवार्य है।" भीम और अर्जुन ने एक स्वर में कहा। कृष्ण ने उनके विचार का समर्थन किया।

दूसरे दिन दुर्योधन ने अपने पक्ष में लड़ने के लिए आयी हुई ग्यारह अक्षौहिणियों की सेना का उनकी सामर्थ्य के अनुसार विभाजन किया। उसने उत्तम सेनाओं को आगे, मध्यम शक्तिवाली सेनाओं को मध्य भाग में तथा दुर्बल सेनाओं को पीछे खड़ा करने का प्रबंध किया। टूटे हुए रथों की मरम्मत करने के लिए लाखों की संख्या में लकड़ियाँ तैयार रखी गयीं। सभी रथों में तूणीर एवं बाण रखे गये। तरह-तरह के आयुध, तैल एवं अन्य सामग्री इकट्ठी की गयी।

इसके बाद दुर्योधन ने अपनी ग्यारह अक्षौहिणियों के लिए ग्यारह सेनापतियों को नियुक्त किया। वे थे–कृपाचार्य, द्रोण, शल्य, सैंधव, सुदक्षिण, कृतवर्मा, अश्वत्थामा, कर्ण, भूरिश्रवसु, शकुनी और बाह्लिक।

भरी सभा में इस प्रकार अक्षौहिणी पतियों को नियुक्त करने के पश्चात दुर्योधन ने भीष्म की ओर मुड़कर हाथ जोड़े प्रणाम किया और कहा–"महात्मन, चाहे बड़ी से बड़ी सेना ही क्यों न हो, योग्य सेनापति के अभाव में वह चींटियों की बांबी की भाँति छितर जायगी। विभिन्न सेनापतियों के बीच स्पर्धा होगी, पर मैत्री न होगी। प्राचीन काल में हैहय क्षत्रियों पर ब्राह्मणों ने युद्ध की घोषणा की। उनके साथ रहकर वैश्य तथा शूद्र वंशियों ने भी हैहयों के साथ युद्ध किया। अनेक युद्ध होने पर भी अल्प संख्यावाले हैहयों की विजय होती गयी। इसका कारण यह है कि हैहयों का एक ही समर्थ नेता था। लेकिन शेष

तीनों वर्णों की सेना के अनेक नेता थे। इस रहस्य का पता लगाकर ब्राह्मणों ने एक समर्थ व्यक्ति को नेतृत्व प्रदान कर हैययों पर विजय प्राप्त की। आप नीतिशास्त्र में शुक्र के समान हैं। हमारे हितैषी हैं, धर्मात्मा हैं, अजेय हैं। इसलिए आप मेरी सारी सेनाओं का अधिपति बन जाइये और जैसे इन्द्र ने देवताओं की रक्षा की, वैसे आप हमारी रक्षा कीजिये।"

दुर्योधन की सारी सेनाओं का सेनापति बनने के लिए भीष्म ने दो शर्तें रखीं: एक–पांडवों में से किसी का वह वध न करेगा। दूसरा कर्ण और वह एक साथ युद्ध न कर सकेंगे। क्योंकि कर्ण उससे ईर्ष्या करता है। इसलिए या तो पहले कर्ण युद्धक्षेत्र में आवे या वह।

भीष्म के मुंह से ये बातें सुनकर कर्ण ने दूर्योधन को आश्वासन देते हुए कहा– "राजन, भीष्म के जीवित रहते मैं युद्धक्षेत्र में क़दम न रखूंगा।"

इसके बाद दुर्योधन ने शास्त्रविधि से भीष्म को सर्व सेनापति के रूप में अभिषेक किया। तब वह, उसके भाई तथा सेनाएँ भी कुरुक्षेत्र की ओर चल पड़ीं।

बलराम ने सुना कि युद्ध-प्रारंभ होनेवाला है, इसलिए कुछ यादव वीरों को साथ ले पांडवों के शिविर में आया। सभी

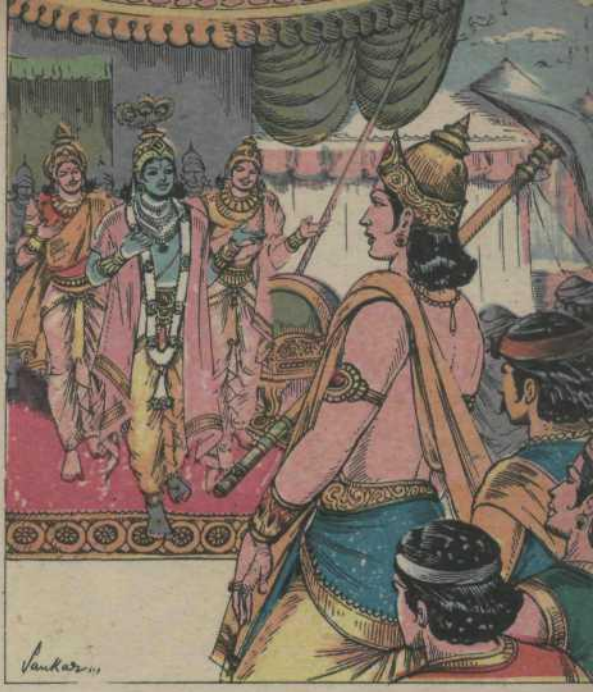

राजाओं, पांडवों तथा कृष्ण ने भी उठकर सादर उसका स्वागत किया। बलराम ने राजा विराट, द्रुपद इत्यादि को नमस्कार किये। तब एक आसन पर बैठकर यों कहा–"शीघ्र ही महान भयंकर युद्ध और जनता का क्षय होनेवाला है। इसके टलने का कोई उपाय नहीं दीखता। मैं इस बात की कामना करता हूँ कि इस युद्ध में आप सब लोग प्राणों के साथ विकलांग हुए बिना बच निकलेंगे। हमारे लिए पांडव जैसे रिश्तेदार हैं, वैसे कौरव भी हैं। मैंने कृष्ण से अनेक बार बताया कि दोनों पक्षों के लोगों को समान दृष्टि से देखें। मगर कृष्ण अर्जुन को प्राणों से

अधिक चाहता है। इसलिए उसने मेरी बात नहीं मानी। भीम और दुर्योधन दोनों मेरे प्रिय शिष्य हैं। दोनों ने मेरे यहाँ गदा-युद्ध का प्रशिक्षण लिया। इस युद्ध में कृष्ण की सहायता से पांडव अवश्य विजयी होंगे। मगर मैं कौरवों का विनाश देख नहीं सकता। इसलिए मैं सरस्वती नदी के तट पर स्थित तीर्थस्थानों का सेवन करने जा रहा हूँ।"

यों कहकर बलराम चला गया। उसी समय रुक्मिणी का भाई रुक्मि एक अक्षौहिणी सेना के साथ पांडवों के पास आया। युधिष्ठिर के द्वारा अतिथि-सत्कार पाकर भरी सभा में अर्जुन से कहा– "अर्जुन, इस युद्ध में तुम्हें मेरी सहायता की ज़रूरत हो तो बताओ। मैं तुम्हारे शत्रुओं का समूल नाश कर बैठूँगा। मेरे पराक्रम के सामने कोई टिक नहीं सकता। इन सभी राजाओं को यहाँ से हिलने तक भी ज़रूरत नहीं है। कृपाचार्य तथा द्रोणाचार्य का वध करके मैं तुम्हारा राज्य तुम्हें वापस दिलाऊँगा।"

इसके उत्तर में अर्जुन ने हँसते हुए कहा– "हे वीरवर, युद्ध का नाम सुन मेरे डरने का कोई सवाल ही नहीं उठता। मैंने बिना किसी की सहायता के गंधर्वों से दुर्योधन की रक्षा की। खांडव वन का दहन कराया। कौरवों की सेनाओं से विराट की गायों को छुड़ाया। तुम यदि मदद करना चाहते हो तो और किसी की करो। नहीं तो, हमारे साथ रहकर यह देखो कि मैं कैसे युद्ध करता हूँ!"

इसके बाद रुक्मि अपनी भारी सेना को लेकर दुर्योधन के पास गया और इसी तरह अपनी आत्मप्रशंसा की। दुर्योधन ने भी रुक्मि की सहायता लेने से अस्वीकार किया। तब जाकर रुक्मि अपनी सेना के साथ अपने देश को लौट गया।

इस प्रकार बलराम और रुक्मि कुरुक्षेत्र के युद्ध में शामिल नहीं हुए। बाक़ी सब लोग किसी न किसी पक्ष में शामिल हुए।

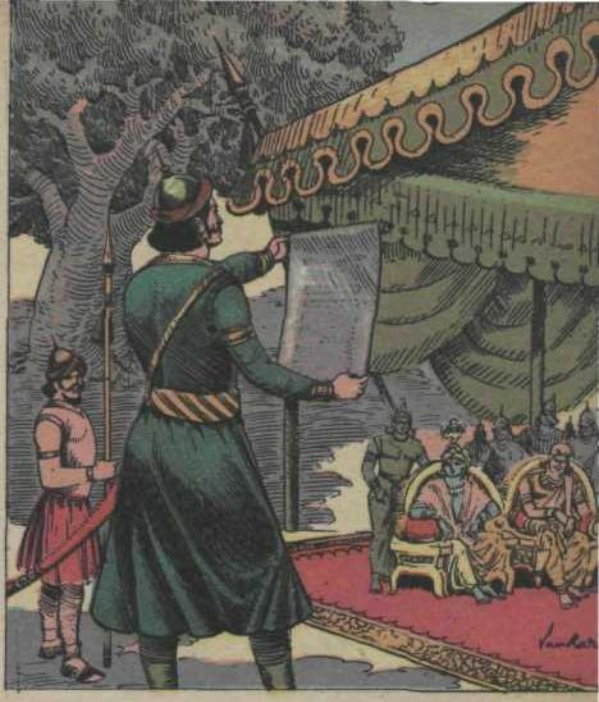

उधर हिरण्वती नदी के तट पर शिविर में रहनेवाले पांडवों के पास दुर्योधन ने शकुनि के पुत्र उलूक को अपने दूत के रूप में भेजा। उसके द्वारा युधिष्ठिर, कृष्ण, भीमार्जुन तथा नकुल-सहदेव के पास दंभपूर्ण संदेश भेजा :

"युधिष्ठिर, तुम रुद्राक्ष धारण की हुई बिल्ली के समान हो! तुम्हारा जप बिलाव जाप है। दुनिया को धोखा देने के लिए तुमने वेदों तथा सहनशीलता को अपनाया है। अब भी सही, क्षात्र धर्म का अनुसरण करके युद्ध करो। तुमने केवल मुझ से पाँच गाँव माँगे, लेकिन पाँच गाँव देने से अस्वीकार करते हुए मैंने तुमको युद्ध के लिए प्रवृत्त किया, इसलिए तुम युद्ध करो।

"हे कृष्ण, तुमने हमारी सभा में कोई जादू करके एक विचित्र रूप दिखाया। उसी रूप में तुम युद्धक्षेत्र में मेरे सामने आ जाओ। योद्धा ऐसी माया को देख क्रुद्ध होते हैं किंतु डरते नहीं। तुमने डींग मारी कि युद्ध में पांडवों को विजयी बनाकर उन्हें अपना राज्य वापस दिलाओगे। तुम अपनी इस बात का पालन करो।

"भीम, तुम पेटू हो, युद्ध करने के योग्य नहीं हो। मैंने अपने प्रताप से तुमको राजा विराट का रसोइया बनाया। तुमने प्रतिज्ञा की कि धृतराष्ट्र के सभी पुत्रों को युद्धक्षेत्र में पराजित करोगे। उस प्रतिज्ञा की रक्षा करो।"

इसी प्रकार दुर्योधन ने अर्जुन, नकुल, सहदेव तथा धृष्टद्युम्न के पास संदेश भेजे। उलूक ने उन्हें पांडवों के शिविर में सुनाये। दुर्योधन के विचारानुसार सब लोग क्रोध में आ गये। तब उन लोगों ने उलूक से कहा–"तुम जाकर दुर्योधन से कहो कि वह हमें युद्ध करने के लिए भड़का रहा है। उसकी इच्छा की अवश्य पूर्ति होगी।"

उलूक को भेजने के पश्चात युधिष्ठिर तथा धृष्टद्युम्न ने अपनी सेनाओं को युद्धक्षेत्र में पहुँचाया। वहाँ पर धृष्टद्युम्न ने अपने वीरों को इस प्रकार कौरव वीरों के

विरुद्ध योद्धा नियत किया। कर्ण के लिए अर्जुन, दुर्योधन के लिए भीम, शल्य के लिए धृष्टकेतु, कृपाचार्य के लिए उत्तमौज, अश्वत्थामा के लिए नकुल, कृतवर्मा के लिए शैब्य, सैंधव के लिए युयुधान, भीष्म के लिए शिखण्डी, शकुनि के लिए सहदेव, वृषसेन के लिए अभिमन्यु, त्रिगर्त राजाओं के लिए उपपांडव और द्रोणाचार्य के लिए वह (धृष्टद्युम्न)।

इस प्रकार कौरव सेनाओं के योद्धाओं के लिए अपनी सेना से प्रतियोद्धाओं का निर्णय करके धृष्टद्युम्न ने पांडव-सेनाओं की व्यूह-रचना की। उसके विचार में अभिमन्यु अर्जुन की अपेक्षा युद्ध में प्रतिभाशाली है।

उधर कौरव सेनाओं का नेता भीष्म ने दुर्योधन की माँग पर दोनों दलों के महा वीरों की श्रेणियाँ निर्धारित कीं।

कौरव सेना में कृतवर्मा, शल्य, सैंधव, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, द्रोण, बाह्लिक, इत्यादि अतिरथी उत्तम वीर हैं। अश्वत्थामा अपने प्राणों के प्रति मोह रखता है, यह कमी न होती तो उसके समान वीर दोनों दलों में दूसरा न होता। वृषसेन तथा अलंबुस नामक राक्षस महारथी हैं। सुदक्षिण, नील, शकुनि, विंद, अनुविंद इत्यादि एक रथी हैं। कर्ण ने अपने कवच-कुण्डल खो दिये और शाप का शिकार हो गया है, इसलिए उसे रथियों की सूची में जोड़ना संभव नहीं है। इस कारण वह अर्द्धरथी है।

पांडवों की सेना में पांचों पांडव अतिरथी हैं। उनमें अर्जुन उभय सेनाओं में असमान योद्धा है। उसका सामना करके लड़ने की शक्ति रखनेवाले भीष्म तथा द्रोणाचार्य हैं, पर दोनों वयोवृद्ध हैं। अभिमन्यु, सात्यकी, उत्तमौज, युधामन्यु, शिखण्डी, धृष्टद्युम्न, उसका भाई सत्यजित, घटोत्कच अतिरथी ही हैं। उपपांडव पांचों को महारथी मान सकते हैं। वैसे ही विराट, द्रुपद, शिशुपाल का पुत्र धृष्टकेतु इत्यादि महारथी हैं।

शिव-लीलाएँ

[६]

वीर संगमय्या नामक एक सुंदर युवक था। वह एक शिवभक्त था। वह सदा शिवजी की आराधना किया करता था।

एक बार संगमय्या का काका उसके विवाह का निश्चय करने के ख्याल से ओंकारपुर में गया। वहाँ पर उसका एक साला था। वह बड़ा धनी और शिवभक्त था। अतिथि के भोजन आदि के द्वारा उचित सत्कार करने के बाद उस गृहस्थ ने पूछा–"बहनोई जी, किस काम पर आये हैं?"

"मैं शुभकार्य के निमित्त ही आया हुआ हूँ। वीर संगमय्या विवाह के योग्य हो गया है। योग्य कन्या की खोज करते इस गाँव में आया हूँ। मेरे ख्याल से तुम्हारी पुत्री चंद्रिणीदेवी वीर संगमय्या के योग्य वधू प्रतीत होती है। तुम्हें कोई आपत्ति न हो तो दोनों का विवाह किया जा सकता है।" अतिथि ने कहा।

इस पर वह गृहस्थ बड़ा खुश हुआ और कहा–"बहनोईजी, हमें वीर संगमय्या से श्रेष्ठ वर कहाँ मिल सकता है? आप ही मुहूर्त का निर्णय करके विवाह संपन्न कीजिये।" उसी वक़्त विवाह के मुहूर्त का निर्णय किया गया।

ओंकारपुर का राजा भास्कर एक दिन टहलने जाकर अपने महल को लौट रहा था। अपने घर की देहली पर खड़ी चंद्रिणी देवी को देख उसके सौंदर्य पर मोहित हो उठा।

राजा उसी कन्या के बारे में सोचते अपने महल को लौटा। मंत्रियों को बुलवाकर कहा कि अमुक कन्या के साथ उसका विवाह कर दे। भास्कर के मंत्रियों ने चंद्रिणी देवी के घर जाकर उसके

अंतिम पृष्ठ का चित्र

पिता से कहा–"महाशय! आपके भाग्य को हम क्या कहे? आप अपनी कन्या का विवाह राजा के साथ कर दीजिये।"

"आप लोग ठीक कहते हैं। राजा मेरी कन्या के पति बने, इससे बढ़कर भाग्य और क्या हो सकता है! मगर अब संभव न होगा। मैंने अपनी कन्या का विवाह एक युवक के साथ निश्चय करके मुहूर्त भी क़ायम किया है।" चंद्रिणी देवी के पिता ने कहा।

मंत्रियों ने जाकर राजा से यह बात कही। इस पर राजा ने अपने मित्रों तथा हितैषियों को बुलाकर समझाया–"आप लोग किसी भी तरह चंद्रिणी देवी को मेरी पत्नी बना नहीं सकेंगे तो मेरे प्राण पखेरू उड़ जायेंगे।"

राजा की ओर से उन लोगों ने चंद्रिणी देवी के पिता के पास जाकर समझाया–"आप भी कैसे पागल हैं? भाग्य आपका पीछा करता आ रहा है तो उसे लात मारते हैं। हमारी बात मानकर अपनी कन्या का राजा के साथ विवाह कीजिये।"

इस पर चंद्रिणी देवी के पिता ने कहा–"आप लोगों को यह समझाने की ज़रूरत नहीं कि राजा का मेरे दामाद बनना मेरे लिए कैसे भाग्य की बात होगी? मगर संपत्ति और वैभव के लोभ में पड़कर मैं अपने वचन से मुकर जाऊँ तो क्या आप ही लोग मेरी निंदा नहीं करेंगे?"

इस पर उन लोगों ने राजा के पास जाकर कहा–"आप उस कन्या को भूल जाइये। उस कन्या के पिता का व्यवहार सचमुच प्रशंसनीय है!"

राजा स्वयं चंद्रिणी देवी के घर आया। राजा को स्वयं अपने घर आते देख चंद्रिणी देवी के माता-पिता डर गये। चंद्रिणी देवी ने उन्हें समझाया कि डरने की कोई ज़रूरत नहीं है। तब वह अकेली राजा के सामने जाकर बोली–"भाई साहब की मुझ पर ऐसी कृपा हो गयी? पधारिये!" यों कहते उसने राजा का स्वागत किया।

"तुम्हारे साथ विवाह करने के विचार से आया हूँ, मेरे साथ ऐसा संबोधन करना क्या अन्याय नहीं है? जब से मैंने तुमको देखा है तब से मैं असहनीय विरह-ताप का अनुभव कर रहा हूँ और दूसरी कन्या को इन आखों से देख नहीं पाता हूँ। मैं तुमको महारानी बनाकर अन्य रानियों के साथ मैं भी तुम्हारी सेवा करूँगा।" राजा ने कहा।

"राजन, वीर संगमय्या के साथ जब से मेरे विवाह का निश्चय हो गया है, तभी से मैं उनको अपने पति मान रही हूँ। एक नारी के लिए दो पति कैसे संभव हो सकते हैं?" चंद्रिणीदेवी ने कहा।

"मुझे ये नीति-वचन क्यों सुना रही हो?" राजा ने कहा।

चंद्रिणीदेवी ने सोचा कि वह हठ करेगी तो राजा उसके साथ कुछ भी कर सकता है। इसलिए शिवजी पर अपना सारा भार डालकर उसने राजा से कहा–"यदि ईश्वर का यही आदेश हो कि मैं आपकी पत्नी बनूं तो ऐसा ही होने दीजिये। हमारे वंश का यह रिवाज़ है कि विवाह के पूर्व एक सप्ताह तक निष्ठा के साथ ईश्वर की आराधना करनी चाहिये। मैं आज ही यह व्रत प्रारंभ करूँगी। एक सप्ताह के बाद विवाह हो सकता है।"

ये बातें सुन राजा प्रसन्नता पूर्वक चला गया। चंद्रिणीदेवी ने अपने माता-पिता को वह सारा वार्तालाप सुनाया। उन लोगों ने यह सारा समाचार वीर संगमय्या को पत्र के द्वारा सूचित कर दिया। वह अपने परिवारवालों की अनुमति लेकर आया। गुप्त रूप से चंद्रिणी देवी के साथ विवाह करके घोड़े पर अपनी पत्नी के साथ अपनें गाँव को लौट आया।

गुप्तचरों के द्वारा राजा को यह समाचार मिला। चंद्रिणीदेवी ने उसके साथ धोखा दिया है, इसलिए राजा ने क्रोध में आकर अपने सैनिकों को बुलाया और आदेश दिया–"तुम लोग वीर संगमय्या

का वध करके चंद्रिणीदेवी को लेते आओ।"

सैनिकों को अपने पीछे आते देख संगमय्या ने सोचा कि वह अकेले कुछ नहीं कर सकेगा, इसलिए अपनी पत्नी की रक्षा करने के हेतु उसने अपने आराध्य देव शरभावतार का ध्यान किया। तुरंत शरभ सालव प्रत्यक्ष हुए और आग्नेय अस्त्र जैसा एक आयुध वीर संगमय्या को दे कहा– "इसके द्वारा तुम शत्रु का वध करो।" यह कहकर वह अदृश्य हो गया।

वीर संगमय्या अपने हाथ में आयुध को देख बड़ा प्रसन्न हुआ और सैनिकों का बुरी तरह से वध करने लगा। राजा एक टीले पर खड़े हो इस दृश्य को देख आश्चर्य चकित हो गया।

इतने में वीर संगमय्या ने अपने आयुध का एक शिवभक्त पर प्रहार करना चाहा, किंतु उसे पहचान कर सिर झुकाकर उसे प्रणाम किया। इस पर राजा ने सोचा कि वीर संगमय्या की शिवभक्ति को आधार बनाकर उसका वध करना आसान है। तब उसने शिवभक्त का वेष धारण किया; पहाड़ से उतरकर वीर संगमय्या के पास आ पहुँचा। वीर संगमय्या ने ज्यों ही सिर झुका कर प्रणाम किया त्यों ही राजा ने उसके कंठ पर तलवार का प्रहार किया। वह तलवार फूलों की माला बनकर संगमय्या के कठ में जा गिरी।

उसी वक़्त शिवजी वृषभवाहन पर प्रत्यक्ष हुए और संगमय्या से वर माँगने को कहा। इस पर संगमय्या ने उसे, उसकी पत्नी, राजा तथा विवाह-पक्ष के लोगों को शिवजी में ऐक्य होने का वर माँगा।

"तुम्हारा अपकार करनेवाले इस दुष्ट राजा को तुम मुक्ति दिलाना चाहते हो?" शिवजी ने संगमय्या से पूछा।

"महादेव, इस राजा ने शैव-चिह्न धारण कर आपके दर्शन किये हैं। इसके सभी पाप धुल गये हैं।" संगमय्या ने कहा। इस पर शिवजी प्रसन्न हो सबको अपने साथ कैलास में ले गये।

१३८. आस्ट्रेलिया के आदिवासी

संसार के अनेक प्रदेशों में आज भी शिलायुगीन जीवन बिताने वाले लोग हैं। ऐसे लोग आस्ट्रेलिया के रेगिस्तान में, जहाँ गोरे लोग यात्रा नहीं कर सकते, तीन सौ के क़रीब हैं। उनकी जीवन-पद्धति बीस हज़ार वर्ष पुरानी है। इस चित्र में एक आदिवासी के द्वारा गुफा में चित्र खींचते देख सकते हैं।

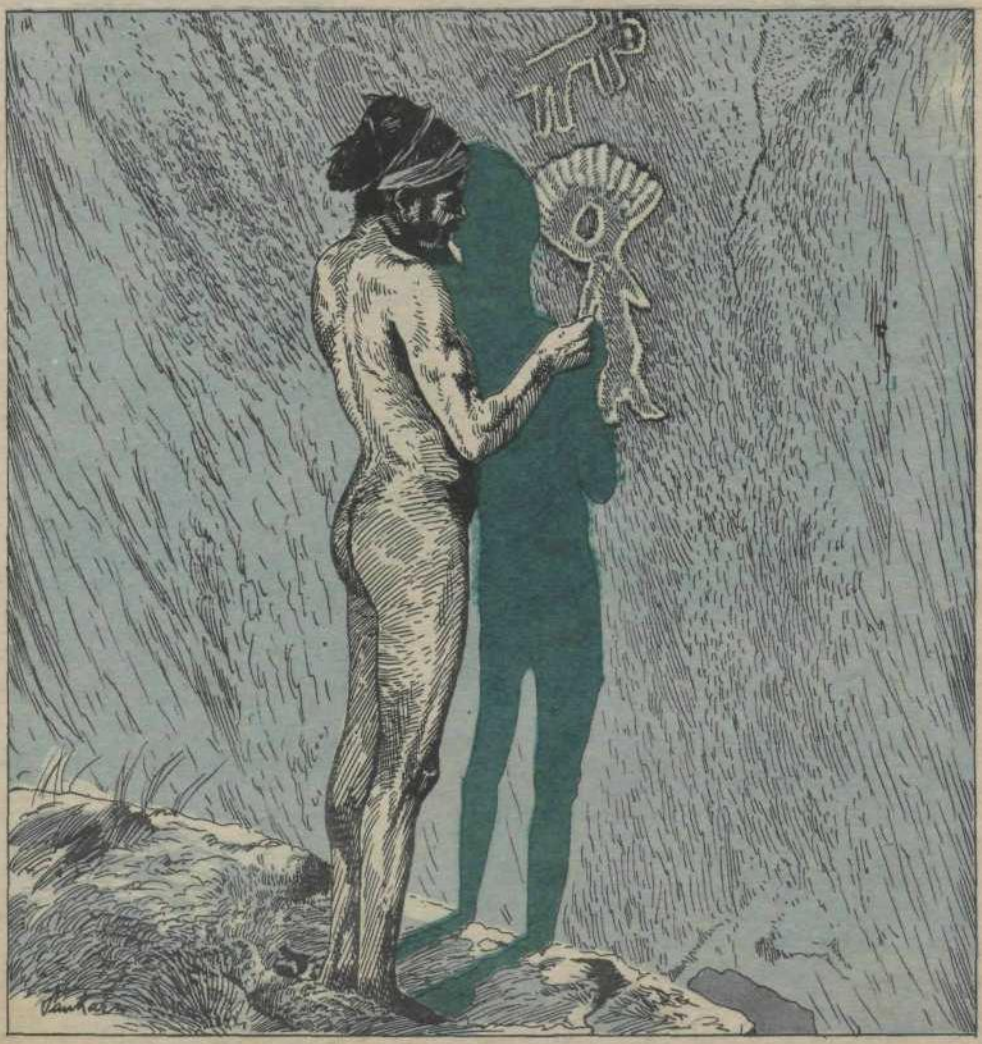

Photo by Anant Desai

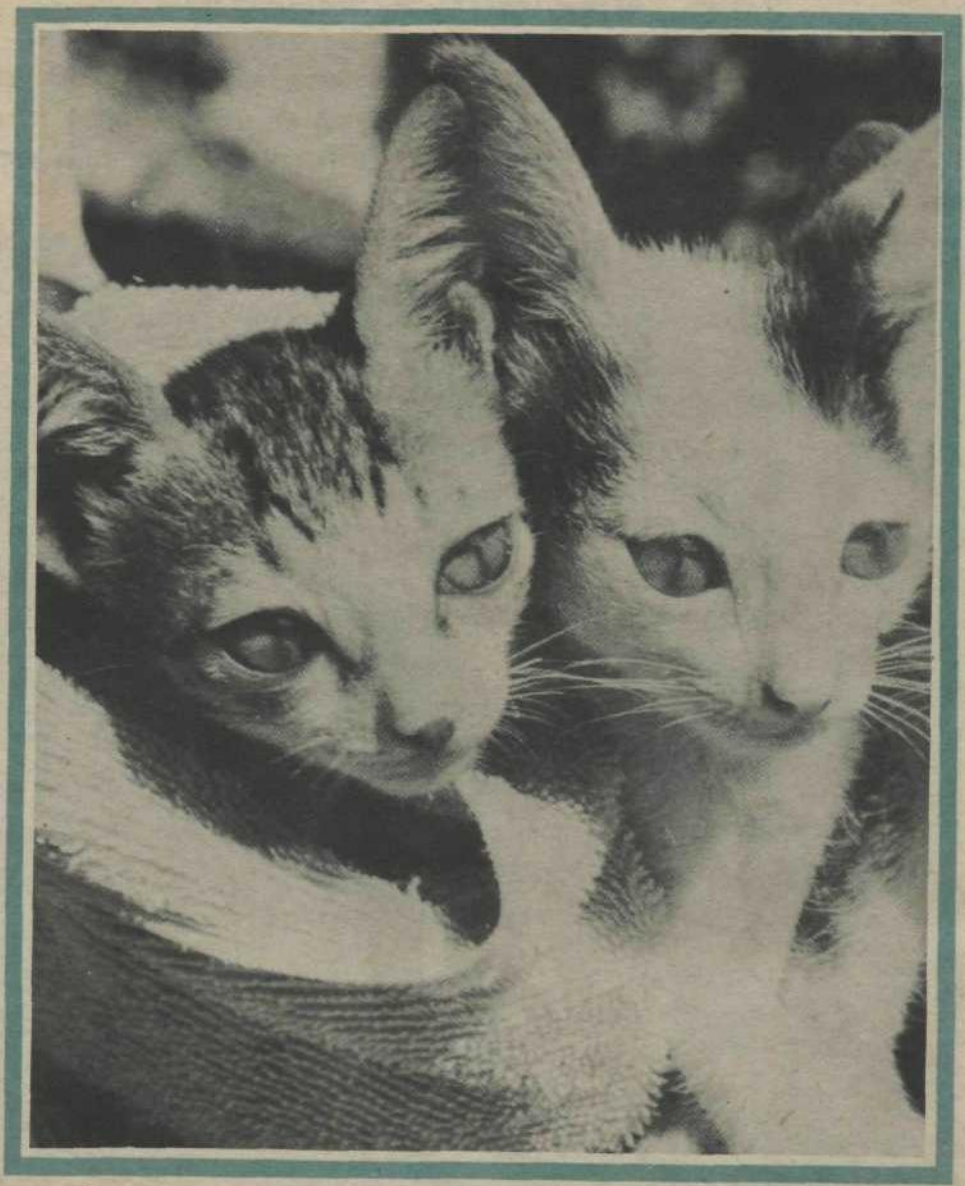

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

बच्चे के मन को भाए

प्रेषक :
सरेन्दरपाल सिंह

Photo by Anant Desai

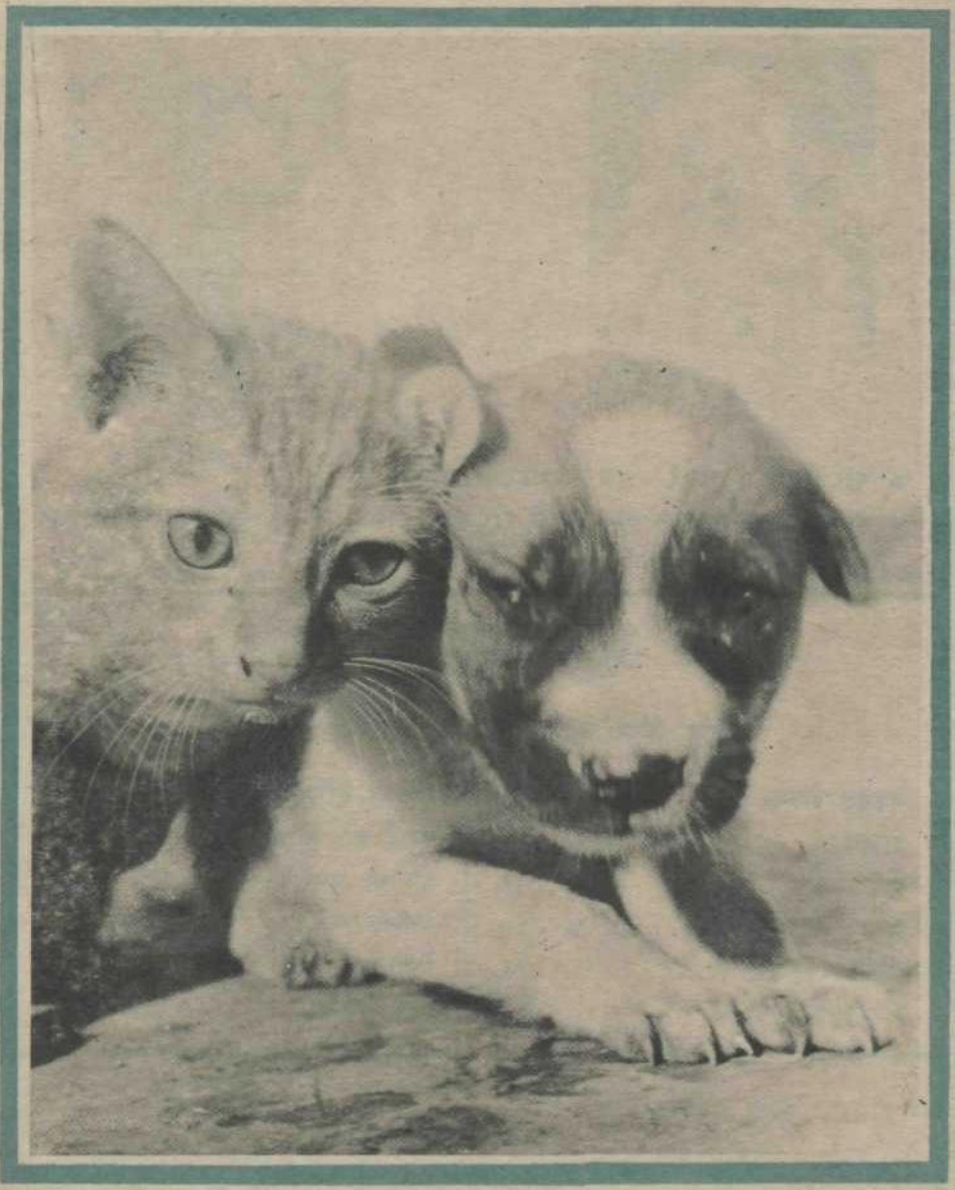

मकान नं. ३०८५
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

घर घर में पूजा जाए

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

★ परिचयोक्तियाँ जुलाई ५ तक प्राप्त होनी चाहिए।

★ परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ सितम्बर के अंक में प्रकाशित की जायंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

अद्भुत फ़ैसला	...	३	विचित्र परीक्षा	...	३६
प्रारब्ध	...	७	पढ़ाई की गोलियाँ	...	३९
यक्ष पर्वत	...	९	गुरु की भूल	...	४३
जनता का बल	...	१७	अनोखा चोर	...	४६
सोमदेव की क़िस्मत	...	२३	महाभारत	...	४९
गानेवाली बकरी	...	३१	शिव-लीलाएँ	...	५७

दूसरा मुखपृष्ठ:
राधा-कृष्ण का नृत्य

तीसरा मुखपृष्ठ:
कृष्ण की भक्ति

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

RAAS/B/156 HIN

१२ साल के या उससे बड़े बच्चे खुद अपना सेविंग्ज़ बैंक एकाउण्ट चला सकते हैं।

FOR PRECISION IN...

Colour Printing

By Letterpress...

...Its B. N. K's., superb printing that makes all the difference. Its printing experience of over 30 years is at the back of this press superbly equipped with modern machineries and technicians of highest calibre.

B. N. K. PRESS
PRIVATE LIMITED,
CHANDAMAMA BUILDINGS,
MADRAS-26.

हमें तो
प्यारा लगता है

चन्दामामा

आपको भी प्यारा लगेगा

चन्दामामा के हरेक पुरुष, हरेक स्त्री और हरेक बच्चा पढ़ता है। अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी, तेलुगु, कन्नड़, तमिल, गुजराती मलयालम, बंगला और उड़िया इन दस भाषाओं में प्रकाशित बच्चों के इस मासिक पत्र में अत्यन्त रोचक और आश्चर्य भरी कहानियां रहती हैं जो हर दिल में एक उत्साह, एक उमंग भर देती हैं।

चन्दामामा बालकों का अपना मासिक पत्र जिससे बड़े बनते नौजवान और नौजवान बनते बड़ो जैसे बुद्धिमान

वार्षिक शुल्क के लिए सम्पर्क करें : डौल्टन एजेंसीज़, चन्दामामा बिल्डिंग मद्रास-२६

पोस्टर कलर्स

वॅक्स क्रेयॉन्स

वाटर कलर ट्यूब

वाटर कलर केक्स

आइल पेस्टल्स

स्टुडण्ट्स ऑईल ट्यूब

पिताजी, राजू के पास कैमल रंगों का एक बाक्स है। वह उनसे सुंदर-सुंदर चित्र रंगाता है। रंग कितने चमकीले और सुंदर हैं। वह कहता है कि ये रंग बहुत ही टिकाऊ होते हैं। तभी तो मैं अपने जन्म दिन के लिए इन रंगों का एक बाक्स चाहता हूँ। क्या पिताजी आप मेरे लिए नहीं लायेंगे?

कैमल आर्ट कलर्स-आपके जीवन को रंगीन बनाते हैं।

कैमल
आर्ट कलर्स

कैम्लिन प्रा. लि.
आर्ट मटेरियल डिव्हीजन
जे. बी. नगर,
बम्बई ४०० ०५९ (भारत)

‘‘पिताजी... मै अपने जन्मदिन के लिए... कैमल रंगोका एक बाक्स चाहता हूँ’’

PRATIBHA 1813-8-HIN

Photo by: S. G. SESHAGIRY